मुद्रक :—
भगवतीप्रसाद सिंह
न्यू राजस्थान प्रेस
७३ए, चासाधोबापाड़ा स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

# यत्किंचित्

प्रस्तुत पुस्तिका में कल्याणक विधि के प्रसंग में स्तवन स्तुति चैत्यवन्दन आदि दिये गये हैं। खमासमण दिये हुए हैं। १५ तिथियों के स्तवन भी दिये गये हैं। कल्याणकों की आराधना करनेवालों को इससे लाभ होगा। कार्तिक पूर्णिमा-सत्तरिसय और मौन इग्यारस की विधि भी इसमें सम्मिलित है, जो उस उस तप के करनेवालों को मार्गदर्शक होगी।

तपश्चर्या कर्मों को काटने में तीव्र ताकत को रखनेवाली होती है। विधिपूर्वक इसका विधान विशेष लाभदायक होता है। पूज्येश्वर खरतर गच्छाचार्य श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वरजी महाराज की आज्ञानुयायिनी साध्वी श्री प्रेमश्रीजी शांतिश्रीजी की प्रेरणा से बीकानेर निवासी स्व० सेठ श्री तेजकरणजी कोचर की धर्मपत्नी और श्री रिखवदासजी कोचर की मातुश्री श्रीमती मगन बाई ने ऊपर लिखे तप विधिपूर्वक आराधन किये हैं। उन्होंने अपने और दूसरों के हित के लिये यह विधिसंग्रह मुनिराज श्री कवीन्द्रसागरजी जो कि पूज्येश्वर आचार्य देव के प्रधान शिष्य हैं उनसे प्रार्थना कर के करवाया है।

## धन्यवाद

प्रस्तुत पुस्तक को छपवाने, संशोधन करने, एवं सुन्दर बनाने में सुप्रसिद्ध जैन इतिहास लेखक बीकानेर के ओसवाल समाज के उदीयमान रत्न श्रीयुत् भँवरलालजी नाहटा ने अपना समय दिया है एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं।

भव्यात्मा भव्यजन इससे लाभ उठावें
इस भावना को रखता हुआ।
मंत्री, श्रीहरिसागर जैन पुस्तकालय
लोहावट ( मारवाड़ )

ॐ अर्हं नमः

श्री सुखसागर-भगवज्जिन-हरिपूज्यगुरुभ्यो नमः

# श्री तपोविधि-संग्रह

## (मंगलम्)

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तमखिलं सत्तत्त्वमत्यद्भुतं,
त्रैकालं समबोधि येन सततं सच्चित्स्फुरज्ज्योतिषा ।
अस्तु स्वस्तिकरं परं शिव-पथ-प्रस्थानभावोद्धुर- ।
मर्हद् दिव्यपदं मुदे भवतुदे भव्याय भव्यात्मनाम् ॥

# श्री कल्याणक तपोविधि

( उपजाति छन्दः )

कल्याणकानीह जिनेश्वराणा
मारावयेत्सुव्रत-बुद्धिनिष्ठः ।
अनंत कल्याण-कला-विलासं
प्रसाधयेन्मारविहीनवृत्तिः ॥

अर्थात्—तीर्थंकर भगवान के च्यवन-१ जन्म-२ दीक्षा-३ केवल ज्ञान-४ एवं निर्वाण-५ ये पांच कल्याणक होते हैं। शासनाधीश्वर श्री महावीर देव ऊपर लिखे पांच कल्याणक और छट्ठा गर्भापहार कल्याणक ऐसे छह कल्याणक माने गये हैं। अच्छे २ व्रतों के आराधन में जिनकी बुद्धि निष्ठावाली है ऐसे भव्य जीव काम-वासना—विषय विकारों से रहित होकर ऊपर लिखे कल्याणकों की आराधना करते हैं। वे भव्य भक्तजन अनंत कल्याणों की कला को साधते हैं।

कल्याणक तप करनेवाले भक्तों को शुभ दिन शुभ मुहूर्त में शुद्ध संयमी गुरु के पास जाकर कल्याणक तप ग्रहण करना चाहिये। उपवास का पच्चक्खाण करना चाहिये। प्रातः, मध्याह्न और संध्या ऐसे तीनों टंक देव वंदन करना चाहिये। प्रतिक्रमण करना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। बने जहां तक आरंभ कमती करना चाहिये। यथाशक्य पौषध आदि करके धर्म की पुष्टि करनी चाहिये। तीर्थंकर देव के कल्याणक जहां हुए हैं उन तीर्थस्थानों के दर्शन करने चाहिये। शक्ति हो तो सब भगवान के कल्याणकों की आराधना बड़े महोत्सव के साथ करनी चाहिये। शक्ति के अभाव में भगवान श्री महावीर देव के छह कल्याणकों की आराधना ही उत्सवपूर्वक करनी चाहिये।

जिस रोज जो कल्याणक हो उस दिन तीर्थंकर भगवान के नाम के साथ—च्यवन कल्याणक के दिन—परमेष्ठिने नमः—जन्म कल्याणक के दिन—अर्हते नमः दीक्षा कल्याणक के दिन—नाथाय नमः—केवल ज्ञान कल्याणक के दिन—सर्वज्ञाय नमः—और निर्वाण

कल्याणक के दिन—पारंगताय नमः जोड़ कर बीस २ मालायें जपनी चाहिये।

च्यवन कल्याणक के दिन चौदह सुपनों की पूजा करके, भगवान के सामने हीरे चढ़ाने चाहिये– १। जन्म कल्याणक के दिन जलयात्रा का वरघोड़ा-जुलूस निकाल कर अष्टोत्तरी स्नात्र पूजा करनी, करानी चाहिये। भगवान के सामने वस्त्र चढ़ाने चाहिये —२। दीक्षा कल्याणक के दिन समवसरण निकाल कर अशोक वृक्ष के नीचे भगवान की दीक्षा का महोत्सव मनाना चाहिये। घी गुड़-वस्त्र आदि वस्तुएँ भगवान के सामने चढ़ानी चाहिये—३। केवल ज्ञान कल्याणक के दिन समवसरण में भगवान की प्रतिमा को विराजमान कर, अष्ट महाप्रातिहार्य की रचना करनी चाहिये। भगवान के सामने मुकुट कुण्डल छत्र चामर आदि चढ़ाने चाहिये —४। निर्वाण कल्याणक के दिन निर्वाण का लड्डु चढ़ाना चाहिये। पंच कल्याणक की पूजा-महोत्सव पूर्वक रचानी चाहिये—५। च्यवन कल्याणक के जैसे ही भगवान श्री महावीर स्वामी के गर्भापहार कल्याणक का

महोत्सव करना चाहिये—६ । उन २ कल्याणकों में उन २ भावों की अभिव्यक्ति के साथ उत्सव पूजा आदि कराने चाहिये ।

तपस्या पूर्ण होने पर, पंच कल्याणक पूजा, प्रभावना; सहधर्मी वात्सल्य, रात्री जागरण आदि महोत्सव कराने चाहिये । उद्यापन में ज्ञान के दर्शन के एवं चारित्र के पांच २ उपकरण कराने चाहिये । देव-गुरु-धर्म की भक्ति करनी चाहिये । इस प्रकार जो भव्य भक्त जन पंच कल्याणकों की आराधना करेंगे वे अनंत कल्याण सुखों को प्राप्त करेंगे ऐसा आगमों में तीर्थंकर गणधर देवों ने फरमाया है ।

## पंच कल्याणक की आराधना में देववन्दन के समय बोलने योग्य चैत्यवन्दन स्तवन और स्तुतियों का संग्रह

# ॥ श्री चैत्यवन्दन संग्रह ॥

### १-चैत्यवन्दन

च्यवन-जन्म दीक्षा विमल, केवल वर निर्वाण ।
कल्याणक प्रभु आपके, जगत जीव सुख ठाण ॥ १ ॥

आराधूँ मैं नाथ नित, साधूँ निज पद भोग ।
शक्ति दीजैं होय ज्यों, भव दुख भाव वियोग ॥ २ ॥

'जिन हरि' पूज्य प्रभो ! सदा, करूं यही अरदास ।
दया बुद्धि [illegible] गुण करो [illegible] प्रकाश ॥ ३ ॥

## २-चैत्यवन्दन

( मालिनी छन्दः )

च्यवन-जनम-दीक्षा-ज्ञान-निर्वाण रूप,
त्रिभुवन सुखदायी पंच कल्याणकों में ।
सुर असुरपति स्व प्रौढ़ भक्ति प्रतापे,
कर दरिशन शुद्धि पाप मिथ्यात्व टारें ॥ १ ॥

भव जल निधि तारें तीर्थ तीर्थंकरों के,
भविक जन हमेशा पुण्य से ही उपावें ।
धन धन जग में वे जीव शिव मार्गगामी,
निज मन-वच-काया-एकता सिद्धि साधें ॥२॥

जनम मरण आदि रोग-संताप सारे,
जिनपति पद सेवा दूर ही से निवारे ।
भव भव यह पाऊं भावना एक देव-
'गणपति हरि' पूज्य ! श्री प्रभो ! पूरय त्वं ॥ ३ ॥

## ३-चैत्यवन्दन

ऋषभादिक चौवीस जिन, जग जन तारणहार।
पंच कल्याणक पुण्यतम–जीवन जय जय कार ॥१॥
शासन पति महावीर जिन–पट कल्याणक भाव।
भव्य जीव आराधते, निज कल्याणक दाव ॥२॥
च्यवनादिक ये पांच छह–कल्याणक सुखकार।
इनके आराधक लहें, भव सागर निस्तार ॥३॥
बीज भूत ये पांच छह–कल्याणक हैं सार।
पर अनंत वे अंत में, होवें जाऊं बलिहार ॥४॥
सुख सागर भगवान 'जिन-हरि' पूजित ये योग।
प्रभु कृपा पावें भविक–टारें भव भय रोग ॥५॥

## ४-चैत्यवन्दन

( हरिगीत-छन्दः )

वंदू उन्हें, जिनने पुनित की, बीस पद आराधना,
जग जीव के कल्याण की, करते हुए शुभ साधना।

तीर्थेश नाम सुकर्म पैदा, कर गये सुर लोक में,
सुख भोग जिनका च्यवन कल्याणक हुआ इस लोक में ॥१॥

जो दिव्य चौदह स्वप्न सूचित, जननी कुक्षी राजते,
तब इन्द्र सविनय नमोत्थुणं, कर मुदित गुण गाजते।
सुमुहूर्त में शुभ लग्न में, वर राजवंश विशेष में,
जिन जन्म कल्याणक समय, सुख छा गया सब देश में ॥२॥

जन्माभिषेक विशेष भक्त्या, इन्द्र आदिक ने किया,
निज भोग कर्म समान, सब सुख भोग पावन पा लिया।
लोकान्तिकों की प्रार्थना, संवत्सरी शुभ दान कर,
दीक्षा महा कल्याण साधें, चार ज्ञानी साधु वर ॥३॥

जो धीर वीर महाप्रतापी, घोरतर तप धार कर,
सुर असुर नर पशु के, उपद्रव सब सहें सम भाव धर।
घनघाती चारों कर्म काटें, वीतरागी पद धरें,
निज आत्म बल उपयोग, केवल ज्ञान कल्याणक वरें ॥४॥

चारों अघाती कर्म की, जड़ जो उखाड़ें अन्त में,
परमात्म गुण पर्याय भोगें, सिद्धि सादि अनंत में।

सुख सिंधु विभु भगवान, 'जिन हरि' पूज्य पावन पद धरा
निर्वाण-कल्याणक नमूं, श्री सिद्ध अगम अगोचरा ॥५॥

## ५=चैत्यवन्दन

(उपजाति छन्दः)

प्रह्वत्सुभक्त्या 'हरि' पूजितानां
जिनेश्वराणां जगदीश्वराणाम् ।
अनंत कल्याण पद प्रदायि
श्रियेऽस्तु कल्याणक पञ्चकं मे ॥१॥

—००*००—

# स्तुति-संग्रह

## १-स्तुति

हों शासन-रसिये जगजन्तु यह भाव
धर, बीस-थानक तप सेवें पुण्य प्रभाव।
तीर्थंकर पावन नाम कर्म गुणखाण
पांचों प्रकटावें कल्याणक कल्याण ॥ १ ॥

अनुपम ये पांचों कल्याणक गुण-योग
करें पंचमज्ञानी पंचमगति सुख भोग।
आतमपद पांचों परमेष्ठि–सिरताज
परपंच रहित नित ध्याउं श्री जिनराज ॥ २ ॥

केवल कल्याणक धारी श्री अरिहंत,
बोधें कल्याणक अर्थरूप जयवंत।
गणधर गुणधारी गूंथे श्री श्रुतज्ञान
आराधूं पाउं कल्याणक वरदान ॥ ३ ॥

पांचों कल्याणक सुखसागर भगवान,
आराधक प्राणी कल्याणक परधान।
हो सुर 'गणपति हरि'-पूज्य जगति जयकार,
निर्भय पद उत्तम पावें सुख भण्डार ॥ ४ ॥

## २-स्तुति

पुण्यानुबंधी-पुण्य कर्म परधान,
तीर्थंकर पदवी धारें श्री भगवान।
कल्याणक उनके पावन पांच विशेष,
धन धन आराधें रहे नहीं दुख लेश ॥ १ ॥
तीर्थंकर तीरथ थापन करें उदार
श्री संघ चतुर्विध आराधें अविकार।
कर आठ करम खय पावें अविचल राज,
गुण आठ विराजित वंदूं सिद्ध समाज ॥२॥
धर पंचमहाव्रत, पंच विशद आचार,
पंचेंद्रिय जीती पंचाश्रव को टार।
सेवो भवि भावे पंच कल्याणक सार
पंचांगी भाखे कल्याणक जयकार ॥ ३ ॥

नित सुख सागर में लीन रहें भगवान,
श्री जिन हरि पूजित साधक सिद्धि निदान।
जो सेवें सेवा करें सुरासुर नाथ–
विजयी पद पावें निज कल्याणक साथ ॥४॥

## ३–स्तुति

जब लों यह चेतन रमण करे परभाव
तब लों भव गिणती जैसे शून्य सभाव।
समकित गुण एको प्रकटे परम विवेक,
कल्याणक पदवी नमूं भाव-अतिरेक ॥१॥

वह च्यवन जनम भी है कल्याणक रूप
दीक्षा वर केवल आतम भाव अनूप।
निरवाण कल्याणक अगम अगोचर आप
आतम सुख भोगे नमूं मिटे संताप ॥२॥

जिन मत सत जानो विश्वधर्म वर मूल
सब दुःख अशान्ति दूर करण अनुकूल।

कल्याणक परतिख कारक सार निमित्त
कल्याणक कारण नमूं नित्य इक चित्त ॥३॥

निज सुख सागर में रमें सदा भगवान्,
कल्याणक भावे पावन विविध-विधान।
भविजन आराधें 'जिन हरि' पूज्य विशेष,
सुरगणनायक भी प्रणमें नमूं हमेश ॥४॥

## ४-स्तुति

मैं क्या हूं? आतम-द्रव्य महागुण-खाण,
फिर क्यों दुख भोगूं? कर्म योग परमाण।
क्या कर्म हमारे हमको दें संताप?
हां; जिनपद पूजो हो कल्याण अमाप ॥१॥

जिन-पद वह क्या है? विजयी परम पुनीत,
जय कैसे पाई? राग-द्वेप लिया जीत।
मैं पा सकता हूं क्या? हां समता धार,
विजयी जिन सेवा कल्याणक दातार ॥२॥

क्यों कर सेवूं मैं ? जिन-आगम अनुसार,
जिन आगम क्या हैं ? परमादर्श उदार ।
कैसे मैं जानूं गुरुगम के संयोग,
सुविहित विधि पाओ कल्याणक सुख भोग ॥३॥
कल्याणक क्या है ? च्यवन जनम अभिराम,
दीक्षा केवल वर मोक्ष आत्म गुण धाम ।
है पांच परन्तु हैं अनंत भण्डार,
सेवो हरि सेवे हो फिर जय जयकार ॥४॥

## ५=स्तुति

(उपजाति-छन्दः)

दीव्यत्सुतीर्थेश्वर नाम कर्म–
प्रभावि-पुण्येन जिनेश्वराणाम् ।
कल्याणि-कल्याणक पञ्चकं यत्
करोतु कल्याण मनन्तमिद्धम् ॥ १ ॥
लब्ध्वात्र कल्याणक-पञ्चकं ये
जिना जगत्यां भवभीति मुक्ताः ।

मुक्त्यै स्फुरद्भक्तिमतां भवन्तु;
भवान्त-विस्तारि-सुखैक सिद्ध्यै ॥ २ ॥

नय प्रमाण प्रकट प्रकाश-
विकास केष्वेव जिनागमेषु ।
कल्याणकानीह निरूपितानि
तदर्थमेवेह समाश्रये तान् ॥ ३ ॥

जिनेश कल्याणक साधकानां
सतां समन्तादधिजीवलोकं ।
'हरिः' स हरतादघ कर्म जन्य-
फलानि दिश्यादथ पुण्यजाति ॥ ४ ॥

# श्री जिन कल्याणक स्तवन संग्रह

## च्यवन कल्याणक स्तवन-१

( तर्ज-सुगुरु तेरी पूजन जग सुखकारी० )

( राग धनाश्री )

पधारो प्रभु दर्शन की बलिहार-पधारो प्रभु० ॥ टेर ।
यथा प्रवृत्ति-अपूर्व करणे-अनिवृत्ति गुणधार ।
प्रकृति सात के खय उपशम से, भव्य भावना धार ॥ १ ॥

स्वभाव से, देवगुरु अधिगमसे, समकित दर्शन सार ।
तत्त्वारथ-स्वारथलय लीना, पीना पुण्य उदार ॥ २ ॥

भोग रोग सम जान जगत में, अनुपम संयम धार ।
जीव चराचर आतम-शासन, कर सुख पावें अपार ॥ ३ ॥

भाव पुनीत यह नित चित सेवें, वीस थानक अविकार।
नाम करम तीर्थंकर पदवी, धारें जय जय कार ॥ ४ ॥

क्षायिक समकित देवलोक सुख-भोग के अपरंपार।
अंत समय नहीं दुःख जरा भी, तनमन मुदित विचार ।५।

चौद स्वप्न सूचित सुखसागर, क्षत्रिय कुल अवतार।
आर्य क्षेत्र भगवान पधारे, वरते मंगलाचार ॥ ६ ॥

च्यवन कल्याणक प्रभुपरमेष्ठि, वंदन वारंवार।
'जिन ! हरि' करते द्रव्य निक्षेपे, भाव से भक्ति प्रचार ॥७॥

## जन्म कल्याणक स्तवन

( तर्ज-माला काटे रे जाला जीव का० )

धन भाग हमारे, दर्शन पाये हैं जिनराज के। टेर।
चौद सुपन की अद्भुत महिमा, मानस प्रमुदित हंसा।
सुपन पाठकों से सुन पावें, राजवंश अवतंसा रे ॥ १ ॥

महासती जगजननी कूखे-तीन ज्ञान के धारी।
महिने नव दिन उपर साढा-सात लगन जयकारी रे ॥ २ ॥

जन्म कल्याणक होते जग में, सुख सुखमा संचारी ।
नरकों में भी उतने क्षण तक ज्योतिः पुण्य प्रचारी रे ॥३॥
छप्पन दिगकुमरी मिल आवे, सूती कर्म रचावें ।
भाव भक्ति से उत्सव करके, जीवन सफल मनावें रे ॥ ४ ॥
चौसठ सुरपति सुरगिरि पर प्रभु-स्नात्र महोत्सव ठावे ।
गंगादिक तीरथ जल कलश-पूजाकर सुख पावें रे ॥ ५ ॥
करें वधाई घर २ मंगल, द्रव्य निक्षेपे भावे ।
भव्य भक्ति कर सुरनर सुखकर, पुण्य कर्म उपजावे रे ॥ ६ ॥
सुख सागर भगवान प्रभु 'जिन-हरि' पूजित उपकारी ।
जन्म कल्याणक नमो अर्हते, दें प्रभु भव-भय टारी रे ॥७॥

## श्री दीक्षा कल्याणक स्तवन-३

( तर्ज—तुमको लाखों प्रणाम )

जीवन ज्योतिवाले जिन को लाखों परणाम ।
जग जीवन रखवाले जिन को लाखों परणाम ॥ टेर ॥
भोग कर्म अनुरूप उदारा, कर्मयोग कर्तव्य प्रचारा ।
पुण्य भोग फलवाले, जिन को लाखों परणाम ॥ १ ॥

अन्तरगत जल कमल समाना, आतम उज्ज्वल भाव प्रधाना।
क्षायिक समकित वाले, जिन को लाखों परणाम ॥२॥

लोकान्तिक सुर निज आचारा, विनती करते जय जय कारा
तीर्थ प्रवर्त्तन वाले, जिन को लाखों परणाम ॥३॥

लोकनाथ संयम सुखकारा, करें बोध जग में उपकारा।
स्वयं बुद्ध पद वाले, जिन को लाखों परणाम ॥४॥

संवत्सर वर दान विधाना, हरें दलिद्दर को भगवाना।
दातारी गुण वाले, जिन को लाखों परणाम ॥५॥

सुरनरवर मिल उत्सव करते, पुण्य भंडारा अपना भरते।
पाप को हरने वाले, जिन को लाखों परणाम ॥६॥

पंचमुष्टि कर लोच विरागी, चउनाणी होवें वड़भागी।
दीक्षा लेनेवाले, जिन को लाखों परणाम ॥७॥

देव द्रव्य 'हरि' दें गुणगाथा—दीक्षा कल्याणक जिननाथा।
नाथ कल्याणकवाले, जिन को लाखों परणाम ॥८॥

# श्री केवलज्ञान कल्याणक स्तवन-४

( तर्ज-जावो जावो हे मेरे साधु रहो गुरु के संग )

हितकारी प्रभुजी लेवें संयम सुखद अपार ।
अविकारी आतम गुण थानक पावे परम उदार ॥ टेर ॥

अप्रमत्त भावों में विचरे, जगपति जगदाधार ।
कर्म प्रकृति जड़मूल खपावे भाव अपूरव धार ॥१॥

अनिवृत्ति आतम गुण उज्ज्वल-सूक्ष्म कषाय विकार ।
क्षीण मोह होते हो जाता, नाम शेष संसार ॥२॥

यथाख्यात चारित्र रमणता, क्षायिक भाव प्रचार ।
घाती चार करम खय होता, पायँ अनंते चार ॥३॥

अनंत केवल ज्ञान अनुपम, केवल दर्शन सार ।
वर अनंत चारित्र विराजित, वीर्य अनंत अपार ॥४॥

दिव्य देवगण मिलकर रचते, समवसरण बलिहार ।
रजत स्वर्ण वर रत्न गढ़ों में, चार कोश विस्तार ॥५॥

अशोक वृक्ष सुर पुष्प वृष्टिवर-तीन छत्र मनुहार ।
चामर युग भामण्डल मणिमय-सिंहासन श्रीकार ॥६॥

दिव्य ध्वनि राजित प्रभु राजे चार दिशा मुख चार ।
देव दुंदुभि नाद सुखद ये, प्रतिहारज जयकार ॥७॥

ज्ञानातिशय पूजातिशय–वचनातिशय धार ।
अपायापगमातिशय श्री—अरिहंत गुण अधिकार ॥८॥

केवल ज्ञान कल्याणक होते, होवे जग उपकार ।
समवसरण में बारह परिषद्-बोध सुनें दिल धार ॥९॥

पुण्य कर्म तीरथ सुखसागर—भविजन तारणहार ।
प्रकटत प्रकटे पुण्य महोदय आतमगुण भंडार ॥१०॥

तीर्थंकर भगवान प्रभु 'जिन-हरि' पूज्येश्वर सार ।
सर्वज्ञातम नमो नमो नित–मंगल मालाकार ॥११॥

## श्री निर्वाण कल्याणक स्तवन-५

( तर्ज-सरोता कहां भूल आये प्यारे ननदोइया )

नमो जी नमो नित्य प्रभु सिद्ध मेरे सइयाँ ॥टेर॥
चार अघाती कर्म काटें, बाकी जो रहइयाँ ।
अयोगी गुणठाणे ध्याने, शैलेशी करइगाँ ॥१॥

शरीर को छोड़ यहां, एक ही समइयाँ ।
लोक अंते सिद्ध गति, आतम ठवइयाँ ॥२॥

जन्म नहीं मृत्यु नहीं, दुख भय खइयाँ ।
सादि अनंते भंगे गति, सिद्धि सुख लइयाँ ॥३॥

आठ गुण इकतीस, गुण अनन्त गइयाँ ।
रूपातीत ध्यान कियां, रूपातीत हइयाँ ॥४॥

पारंगत पद धरें, आगम दिखइयाँ ।
पनरे भेदे सिद्ध होवें, भव में न अइयाँ ॥५॥

आप पद भोगें आप, ओर को न दइयाँ ।
चिन्मय चिद्रूप–अगम गमइयाँ ॥६॥

'जिन हरि' पूज्य प्रभु–परमानन्द पइयाँ ।
ध्यान ध्येय एक भाव–लट भँवरइयाँ ॥७॥

# गर्भापहार कल्याणक

## श्री वीर स्तवन-६

( तर्ज-चाहे तारो या न तारो—कव्वाली )

गर्भापहार कल्याणक—वर्द्धमान जय हो।
श्री ज्ञातवंशी नृपवर—सिद्धार्थ नंद जय हो॥ टेर॥
भरतेश चक्रवर्त्ती—प्रभु आदि के कथन से।
मरिचि के भव में कहते—अन्तिम प्रभु की जय हो॥१॥
कुल-जाति मान करके—मरिचि ने कर्म बांधा।
आखिर उसी को तोड़ा, महावीर देव जय हो॥२॥
श्री इन्द्र के हुकम से—हरिणैगमेषी देवा।
गर्भापहार करता—कहता जिनेश जय हो॥३॥
श्री देवानन्दाकुक्षी—से त्रिशला-दिव्य कुक्षी।
की पुण्य जन्म पावन—तीर्थाधिनाथ जय हो॥४॥
कृत पूर्व दुष्कृतों का-प्रतिशोध पुण्य कर्म।
कल्याण रूप होता—कल्याणकारी जय हो॥५॥

सिंहादि चौद अनुपम–वर स्वप्न देखती मां ।
श्री भद्रबाहुवाणी–हस्थुत्तरा में जय हो ॥६॥

आश्चर्य मल्लि जिनका–कल्याण रूप होता ।
गर्भापहार वैसे–कल्याण रूप जय हो ॥७॥

आराधते भविक जन–सुख सिन्धुमग्न होते ।
हरिपूज्य रूप होते–देवाधिदेव जय हो ॥८॥

—:००:—

देव वन्दन किये बाद च्यवन-गर्भापहार-जन्म-दीक्षा और केवल कल्याणक में-श्री अरिहंत प्रभु के १२ गुण-कीर्तन पूर्वक १२ नमस्कार करें। निर्वाण कल्याणक में श्री सिद्ध पद के ८ गुण कीर्तन पूर्वक ८ नमस्कार करें।

# श्री अरिहंत के १२ नमस्कार

१—अशोक वृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
२—पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
३—दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
४—चामर युग प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
५—सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
६—भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
७—दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
८—छत्र त्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः ।
९—ज्ञानातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ।
१०—पूजातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ।
११—वचनातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ।
१२—अपायापगमातिशय संयुताय श्री अर्हते नमः ।

# श्री सिद्ध के ८ नमस्कार

१—अनन्त ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः।

२—अनन्त दर्शन संयुताय श्री सिद्धाय नमः।

३—अव्याबाध सुख सहिताय श्री सिद्धाय नमः।

४—अनन्त चारित्र संयुताय श्री सिद्धाय नमः।

५—अक्षय स्थिति गुण युक्ताय श्री सिद्धाय नमः।

६—अरूपि गुण युक्ताय श्री सिद्धाय यमः।

७—अगुरु लघु गुण युक्ताय श्री सिद्धाय नमः।

८—अनन्त वीर्य गुण संयुताय श्री सिद्धाय नमः।

---

इस प्रकार नमस्कार किये बाद जिस महीने में जिस तिथि में जिस भगवान का जो कल्याणक हो उसमें श्री जिनकल्याणक सूची देख कर उस पद की २० माला जपनी चाहिये।

# श्री जिनकल्याणक सूची

## कार्तिक कृष्णपक्ष में-५

५ श्रीसंभव जिन सर्वज्ञाय नमः ।
१२ श्री पद्मप्रभ अर्हते नमः ।
१२ श्री नेमिनाथ परमेष्ठिने नमः ।
१३ श्री पद्मप्रभ नाथाय नमः ।
३० श्री महावीर पारंगताय नमः ।

## कार्तिक शुक्ल पक्ष में-२

३ श्री सुविधिनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
१२ श्री अरनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

## मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में-४

५ श्री सुविधनाथ अर्हते नमः ।
६ श्री सुविधि जिन नाथाय नमः ।

१० श्री महावीर नाथाय नमः ।
११ श्री पद्मप्रभु पारंगताय नमः ।

## मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में-६

१० श्री अरनाथ अर्हते नमः ।
१० श्री अरनाथ पारंगताय नमः ।
११ श्री अरजिन नाथाय नमः ।
११ श्री मल्लीनाथ अर्हते नमः ।
११ श्री मल्लीजिन नाथाय नमः ।
११ श्री मल्लीनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
११ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
१४ श्री संभवनाथ अर्हते नमः ।
१५ श्री संभव जिन नाथाय नमः ।

## पौष कृष्ण पक्ष में ५

१० श्री पार्श्व नाथ अर्हते नमः ।
११ श्री पार्श्वजिन नाथाय नमः ।

१२ श्री चंद्रप्रभ अर्हते नमः ।

१३ श्री चन्द्रप्रभ नाथाय नमः ।

१४ श्री शीतल जिन सर्वज्ञाय नमः ।

## पौष शुक्ल पक्ष में-५

६ श्री विमलनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

९ श्री शांतिनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

११ श्री अजितनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

१४ श्री अभिनंदन सर्वज्ञाय नमः ।

१५ श्री धर्मनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

## माघ कृष्ण पक्ष में-५

६ श्री पद्मप्रभ परमेष्टिने नमः ।

१२ श्री शीतलनाथ अर्हते नमः ।

१२ श्री शीतलजिन नाथाय नमः ।

१३ श्री ऋषभदेव पारंगताय नमः ।

३० श्री श्रेयांसजिन सर्वज्ञाय नमः ।

## माघ शुक्ल पक्ष में-६

२ श्री अभिनंदनजिन अर्हते नमः ।

२ श्री वासुपूज्य सर्वज्ञाय नमः ।

३ श्री विमलनाथ अर्हते नमः ।

३ श्री धर्मनाथ अर्हते नमः ।

४ श्री विमलजिन नाथाय नमः ।

८ श्री अजितनाथ अर्हते नमः ।

६ श्री अजितजिन नाथाय नम ।

१२ श्री अभिनंदन नाथाय नमः ।

१३ श्री धर्मजिन नाथाय नमः ।

## फाल्गुन कृष्ण पक्ष में-१०

६ श्री सुपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः ।

७ श्री सुपार्श्वनाथ पारंगताय नमः ।

७ श्री चन्द्रप्रभ सर्वज्ञाय नमः ।

६ श्री सुविधिनाथ परमेष्ठिने नमः ।

११ श्री ऋषभदेव सर्वज्ञाय नमः ।

१२ श्री श्रेयांसजिन अर्हते नमः ।

१२ श्री मुनि सुव्रत सर्वज्ञाय नमः ।
१३ श्री श्रेयांस नाथाय नमः ।
१४ श्री वासुपूज्य अर्हते नमः ।
३० श्री वासुपूज्य नाथाय नमः ।

## फाल्गुन शुक्ल पक्ष में=५

२ श्री अरनाथ परमेष्ठिने नमः ।
४ श्री मल्लीनाथ परमेष्ठिने नमः ।
८ श्री संभवनाथ परमेष्ठिने नमः ।
१२ श्री मल्लीनाथ परंगताय नमः ।
१२ श्री मुनि सुव्रत नाथाय नमः ।

## चैत्र कृष्ण पक्ष में=५

४ श्री सुपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नमः ।
४ श्री पार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः ।
५ श्री चन्द्रप्रभ परमेष्ठिने नमः ।
८ श्री आदीश्वर अर्हते नमः ।
८ श्री आदीश्वर नाथाय नमः ।

## चैत्र शुक्ल पक्ष में-८

३ श्री कुंथुनाथ सर्वज्ञाय नमः
५ श्री अजितनाथ पारंगताय नमः
५ श्री संभवनाथ पारंगताय नमः
५ श्री अनंतनाथ पारंगताय नमः
६ श्री सुमतिनाथ पारंगताय नमः
११ श्री सुमतिनाथ सर्वज्ञाय नमः
१३ श्री महावीर अर्हते नमः
१५ श्री पद्मप्रभ सर्वज्ञाय नमः

## वैशाख कृष्ण पक्ष में-६

१ श्री कुंथुनाथ पारंगताय नमः
२ श्री शीतलनाथ पारंगताय नमः
५ श्री कुंथुजिननाथाय नमः
६ श्री शीतलनाथ परमेष्ठिने नमः
१० श्री नमिनाथ पारंगताय नमः

१३ श्री अनंतनाथ अर्हते नमः
१४ श्री अनंतजिन नाथाय नमः
१४ श्री अनंतनाथ सर्वज्ञाय नमः
१४ श्री कुंथुनाथ अर्हते नमः

## वैशाख शुक्ल पक्ष में-८

४ श्री अभिनंदन परमेष्ठिने नमः
७ श्री धर्मनाथ परमेष्ठिने नमः
८ श्री अभिनंदन पारंगताय नमः
८ श्री सुमतिनाथ अर्हते नमः
९ श्री सुमतिजिन नाथाय नमः
१० श्री महावीर सर्वज्ञाय नमः
१२ श्री विमलनाथ परमेष्ठिने नमः
१३ श्री अजितनाथ परमेष्ठिने नमः

## ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में-५

८ श्री मुनिसुव्रत अर्हते नमः
९ श्री मुनिसुव्रत पारंगताय नमः

१३ श्री शांतिनाथ अर्हते नमः

१३ श्री शांतिनाथ पारंगताय नमः

१४ श्री शांतिजिन नाथाय नमः

## ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में ४

५ श्री धर्मनाथ पारंगताय नमः

६ श्री वासुपूज्य परमेष्ठिने नमः

१२ श्री सुपार्श्वनाथ अर्हते नमः

१३ श्री सुपार्श्वजिन नाथाय नमः

## आषाढ़ कृष्णपक्ष में-३

४ श्री आदिनाथ परमेष्ठिने नमः

७ श्री विमलनाथ पारंगताय नमः

६ श्री नमिजिन नाथाय नमः

## आषाढ़ शुक्ल पक्ष में-३

६ श्री महावीरजिन परमेष्ठिने नमः

८ श्री नेमिनाथ पारंगताय नमः

१४ श्री वासुपूज्य पारंगताय नमः

## श्रावण कृष्ण पक्ष में-४

३ श्री श्रेयांसजिन पारंगताय नमः

७ श्री अनंतनाथ परमेष्ठिने नमः

८ श्री नमिनाथ अर्हते नमः

६ श्री कुंथुनाथ परमेष्ठिने नमः

## श्रावण शुक्ल पक्ष में-५

२ श्री सुमतिनाथ परमेष्ठिने नमः

५ श्री नेमिनाथ अर्हते नमः

६ श्री नेमिजिन नाथाय नमः

८ श्री पार्श्वनाथ पारंगताय नमः

१५ श्री मुनिसुव्रत परमेष्ठिने नमः

## भाद्रपद कृष्ण पक्ष में-३

७ श्री चन्द्रप्रभ पारंगताय नमः

७ श्री शांतिनाथ परमेष्ठिने नमः

८ श्री सुपार्श्वनाथ परमेष्ठिने नमः

## भाद्रपद शुक्ल पक्ष में-१

९ श्री सुविधिनाथ पारंगताय नमः

## आश्विन कृष्ण पक्ष में-२

१३ श्री महावीर गर्भापहाराय नमः

३० श्री नेमिनाथ सर्वज्ञाय नमः

## आश्विन शुक्ल पक्ष में-१

१५ श्री सुविधिनाथ परमेष्ठिने नमः

—००:००—

# १५ तिथि स्तवन-संग्रह

## एकम-स्तवन

( तर्ज-मेतारज मुनिवर धनधन तुम अवतार )

केवल एक अनंत से जी, राजित ज्ञान महंत ।
एकम महिमा प्रभु भणेजी, वर्द्धमान भगवंत ॥

भविक जिन आराधो धर भाव,
प्रकटे परम प्रभाव ॥ भवि० टेर ॥

एकम आतम आपणो जी, एकाकी अविकार ।
परमातम गुणसे भर्यो जी, ध्याता हो भव पार ॥१॥
एक अनातम जाणियेजी, बहिरातम परिणाम ।
पुद्गल आदिक जो तजेजी, पावे निजगुण धाम ॥२॥
एक दंड हिंसा तणो जी, दण्डित आतम ताम ।
एक अदंड जो आचरे जी, पसरे सुख अविराम ॥३॥

एक क्रिया करतां थकांजी, जीव लहे भव रोग ।
एक अकिरिया साधतां जी, भव भय भाव वियोग ॥४॥

एक लोक षड् द्रव्य से जी, पूरण शाश्वत रूप ।
लोक शिखर सिद्धि गति जी, सिद्ध अगम गुण भूप ॥५॥

एक अलोक अनंत में जी, केवल एक आकाश ।
केवलज्ञान थकी प्रभु जी, देखे पुनीत प्रकाश ॥६॥

एक धरम सत रूप है जी, वस्तु स्वभाव विशेष ।
भेद और उस धर्म के जी, साधक साधन शेष ॥७॥

धर्मभाव विपरीत है जी, एक अधर्म विचार ।
पर परिणति छोड़े वही जी, पावे भवजल पार ॥८॥

एक पुण्य एक पाप है जी, एक बंध के भेद ।
आप अमूर्छित भाव से जी, वरते ज्ञानी अखेद ॥९॥

बन्धन टूटे जीव के जी, मोक्ष सहज तब होय ।
मोक्ष एकता भावमें जी, तात्त्विक भेद न कोय ॥१०॥

छोड़े आश्रव एक को जी, धारे संवर एक ।
एक वेदना निर्जरा जी, बोध करे सविवेक ॥११॥

समवायांगे भाखियो जी, एक विषय अधिकार ।
एकम दिन अवलंबतां जी, न रहे कर्म विकार ॥१२॥

कुंथु प्रभु निर्वाण को जी, कल्याणक दिन एह ।
वद वैशाखे पूजियां जी, आप कल्याणक गेह ॥१३॥

सुखसागर भगवान है जी, जिन-हरि पूज्य प्रधान ।
सेवो सुखमेवा लहो जी, दिव्य 'कवीन्द्र' मतिमान ॥१४॥

## द्वितीया-स्तवन

( तर्ज-ल्हेरदार बिछुड़ो० )

दुविध धर्म उपदेशक जिन सुखकंदा हो
मेरे मनवा वंदो जयकारी ।
दूज दिवस में पावो परमानंदा हो
मेरे मनवा वंदो अविकारी । टेर ।

श्रावण सुद दिन दूज,
सुमति जिन चविया हो मेरे मनवा ।
ध्यावो सुमति पावो,
कुमति भगावो हो मेरे मनवा वंदो० ॥१॥

फागुन सुद की दूज,
परम अभिरामी हो मेरे मनवा।
च्यवे चक्री अरनाथ,
प्रभु जगस्वामी हो मेरे मनवा वंदो० ॥२॥
माघ सुदी वर दूज,
जनम सुखकारी हो मेरे मनवा।
अभिनंदन जिन जगनंदन,
उपकारी हो मेरे मनवा वंदो० ॥३॥
उसी मासकी पावन तिथि में,
ज्ञानी हो मेरे मनवा।
वासुपूज्य प्रभु केवल पद,
सुख खानी हो मेरे मनवा वंदो० ॥४॥
वदि वैशाख की दूज शीतल,
शिवगामी हो मेरे मनवा।
पाप ताप हर दें प्रभु शिव-
विशरामी हो मेरे मनवा वंदो० ॥५॥
कल्याणक तिथि दूज-
जगत प्रभु पूजो हो मेरे मनवा।

द्रव्य भाव दो भेद

सुगुरुगम बूझो हो मेरे मनवा वंदो० ॥६॥

दोनों दंड निवारो,

भेद विचारो हो मेरे मनवा ।

अर्थ-अनर्थ समर्थ-

समझ व्यवहारो हो मेरे मनवा वंदो० ॥७॥

दो राशि में जीव अजीव,

पिछानो हो मेरे मनवा ।

जीव राशि में मैं हूं क्या ?,

यह जानो हो मेरे मनवा वंदो० ॥८॥

दो बंधन हैं राग द्वेष,

दुखकारी हो मेरे मनवा ।

वीतराग पद पावो बन्धन,

टारी हो मेरे मनवा वंदो० ॥९॥

सित पख दूजे चन्द्रकला,

गुण पावो हो मेरे मनवा ।

सुव्रत विधि आराधो,

ज्ञान चढ़ावो हो मेरे मनवा वंदो० ॥१०॥

परम दयालु वीर प्रभु,
उपदेशे हो मेरे मनवा ।
'हरि कवीन्द्र' मति अगम,
भाव सविशेषे हो मेरे मनवा वंदो० ॥११॥

## तृतीया-स्तवन

( तर्ज-तुमको लाखों प्रणाम )

तीज तिथि में प्रभु को पूजो प्रेम धरी ।
जानो जिनवर पूजा तीनों ताप हरी ॥ टेर ॥

तीज माघ सित सुकृत ताजा, विमल धरम दोनों जिनराजा।
जनमे तारणहार, जग में धन्य घरी ॥ १ ॥

कार्तिक चैत्र शुकल तिथि तीजे, सुविधि कुंथु प्रभु केवल लीजें।
लोक अलोक प्रकाश पूरित ज्ञान सिरी ॥ २ ॥

श्रावण वद तीजे सुखकंदा, श्रीश्रेयांस प्रभु जिनचंदा ।
करें करम मल दूर, परणे शिव सुन्दरी ॥ ३ ॥

सम्यग् दर्शन ज्ञान चरण हैं, शरण रहित को परम शरण है।
शिव सरणी अविकार, भव भय दुःख हरी ॥ ४ ॥

मन वच काया दंड निवारो, जीवन में संयम धन धारो।
करो निजातम ध्यान, प्रभु की सेव करी ॥ ५ ॥

मन वच काया गुप्ति धारो, निज परमातम पद उजियारो।
भरो हृदय सविवेक, दुविधा दूर करी ॥ ६ ॥

मायानियाण मिथ्या दरसन, शल्य तजो कर निज मन परसन।
प्रभु पदमें अनुराग, धारो भाव भरी ॥ ७ ॥

निज ऋद्धि रससाता गारव, तजो मिटे ज्यों दुखकर भव दव।
प्रकटे परमानंद, दर्शन पान करी ॥ ८ ॥

ज्ञान तथा दर्शन चारित की, विराधना छोड़ो सुन हित की।
जिनवाणी जयकार, त्रिपदी पाप हरी ॥ ९ ॥

सुखसागर भगवान दयाला, जिन हरिपूज्य सुपुण्य विशाला।
तीन तत्त्व अभिराम, सेवा धार खरी ॥ १० ॥

काल अनादि निजमें सोती, प्रकटे रवि शशि अद्भुत ज्योति।
हो 'कवीन्द्र' मति अगम, निजातम सहचरी ॥ ११ ॥

## चतुर्थी स्तवन

( तर्ज-सलुणा )

चउगति चूरक श्री प्रभु रे, पूजूं परमाधार सलुणा।
चउविध धर्म प्रकाशता रे, जगजन तारणहार सलुणा। टेर।

आषाढ कृष्ण की चौथ को रे, चविया ऋषभ जिनेश।
वैशाख सुद भय भंजनारे, अभिनंदन परमेश ॥१॥

फाल्गुन सुदी चौथे चव्या रे, मल्लीश्वर गुणधाम।
चैत वदी प्रभु पासजीरे, चविया करूँ प्रणाम ॥२॥

जेठ सुदी चौथ पावनी रे, जनम सुपारस नाथ।
माघ सुदी चौथें हुई रे, दीक्षा विमल सनाथ ॥३॥

चैत वदी चौथे लहें रे, पारस केवल नाण।
च्यवन जनम व्रत ज्ञान के रे, चौथ में जिन कल्याण ॥४॥

कल्याणक दिन जान के रे, त्यागूँ चार कषाय।
दो ध्यान त्यागूँ दो धरूं रे, अकलुष भाव अमाय ॥५॥

विकथा चार निवार के रे, संज्ञा विसारूं चार।
चउविध बंध टूटे परा रे, निजपद रमण उदार ॥६॥

द्रव्य क्षेत्र काल भाव के रे, चउविध पावन योग।
जीवन में होते जगें रे, चिन्मय निज गुण भोग ॥७॥
निज गुण घाती कर्म की रे, कर दूं चौकडी दूर।
चार अनंत तभी मिले रे, पाउं सुख भरपूर ॥८॥
कर्म अघाती चार को रे, होते मूल अभाव।
आप अरूपी आतमा रे, प्रकटे सिद्ध स्वभाव ॥९॥
परम दयानिधि श्री प्रभुरे, सुखसागर भगवान।
जिन हरि पूज्य सदा नमूं रे, पाउं पद कल्यान ॥१०॥
भव चारक वारक गुणी रे, वीस चार जिनराज।
अगम 'कवीन्द्र' मति सदा रे, पाउं प्रभुपद साज ॥११॥

## पंचमी स्तवन

( तर्ज-मनमोह्युं मारुं मोह्युं प्रभुतारा ध्यान मा )

प्रभु सेवो प्रभु सेवो प्रभु सेवा सार है।
पंचम ज्ञान विराजित प्रभु की सेवा सार है ।प्र०टेर।
चैत वदी पंचमी चन्द्राप्रभु, जगदाधार है।
च्यवन कल्याणक होते फैला, सुख संसार है। १ ।

श्रावण सुद पंचमी दिन पावन, नेमिनाथ का।
जन्म कल्याणक होते घर घर, मंगलाचार है। २।

वद वैशाख तिथि पांचम में, कुंथुनाथ का।
दीक्षा कल्याणक वर होते; जय जय कार है। ३।

काति वदि पंचमी प्रभु तीजे, संभवनाथ का।
ज्ञान कल्याणक लोक प्रकाशक परमोदार है। ४।

अजित संभव विभु अनंत जिनवर, शिव निर्वाण की।
चैत सुदी पंचमी तिथि उत्तम, जय श्रीकार है। ५।

ज्येष्ट सुदी पंचमी तिथि तैसे, श्री धर्मेश की।
मोक्ष कल्याणक पुनीत परंपर, सुख भंडार है। ६।

किरियां पांच निवारी महाव्रत, पांचों धार के।
पंच काम गुण आश्रव पांचों, रूंधे पार है। ७।

पांचों संवर द्वार-निर्जरा-थानक भाव ते।
पांच समिति को साधे साधक-शुद्धाचार है। ८।

पंचम ज्ञान प्रकटते पांचों-अस्तिकाय को।
पूर्ण रूप जानें विज्ञानी-गुण बलिहार है। ९।

समवायांगे पांच वस्तुएँ, वर्णित भावना ।
सुखसागर भगवान बतावें परमाधार हैं । १० ।
जिन हरि पूज्य दयामय आज्ञा तिथि आराधते ।
सुमति 'कवीन्द्र' सुयश नित गाते जय जय कार है । ११ ।

## षष्ठी स्तवन

( तर्ज-गुजराती गरवा-पूनम चांदनी शी खीली अछे रे )

वंदो जग जीवन जगदीश्वर जगदाधार को रे
छठ दिन जिन कल्याणक अनुपम अवसर जान
अंतर शत्रु छह को जीतो चतुर सुजान
पूजो द्रव्य भाव भवि भवजल तारणहार को रे । टेर ।

माघ वदी पद्म प्रभु—शीतल वद वैशाख ।
जेठ वदी श्रेयांस जिन-वीर प्रभु सुद पाख ॥
आषाढी में ध्यावो च्यवन कल्याणक चार को रे । १ ।

मिगसर वद सुविधि प्रभु-सुविधिभाव परधान ।
श्रावण सुद बाइसवे-नेमिनाथ भगवान ॥
दीक्षा कल्याणक से देवें सुख, संसार को रे । २ ।

श्री सुपार्श्व फागुन वदी, प्रभु विमल अरिहंत।
पोष सुदी छठ पुण्य दिन पावें चार अनंत॥
केवल कल्याणक से भर दें ज्योति अपार को रे। ३।

कृष्ण नील कापोत ये, तज दो लेश्या तीन।
तेज पद्म अरु शुक्ल वर- लेश्या भावे लीन॥
कर के छह लेश्या के शुद्धा शुद्ध विचार को रे। ४।

जग में जीवनिकाय छह-रक्षा करो हमेश।
बाहिर आभ्यन्तर करो-छह छह तप सविशेष॥
तप कर आतम शुद्धे मेटो कर्म-विकार को रे। ५।

समुद्घात छह होत हैं, छद्मस्थों के नेक।
अर्थावग्रह भेद छह; उनसे करो विवेक॥
सेवो सम्यग् दर्शन-ज्ञान-चरण सुखकार को रे। ६।

पांच इन्द्रियाँ साथ में छट्ठा मन लो जीत।
विषय विकारों से रहो होकर आप अतीत॥
निज बल तोडो कर्म जनित भव कारागार को रे। ७।

नर भव आरज खेत वर-सुकुल जन्म अभिराम ।
श्रुति श्रद्धा आचार ये छह थानक गुणधाम ॥
पाकर पुण्य संयोगे पावो पद अविकार को रे । ८ ।
छह थानक उन्माद के छह परमाद प्रधान ।
दुर्गति कारण छोड के-सेवो साधु विधान ॥
श्रीजिन पद सेवा से पावो गुण भण्डार को रे । ९ ।
छह भावों में दिव्य तम-धारो क्षायिक भाव ।
कर्मक्षय हो जाय फिर-प्रकटे परम प्रभाव ॥
उपशम भाव प्रथम दरवाजो निज विस्तार को रे । १० ।
सुख सागर भगवान जिन-हरि पूज्येश्वर आप ।
छठ दिन सेव्यां भावसे-हरें त्रिविध संताप ॥
करत सुमति 'कवीन्द्र' यशो निधि-विधि विस्तार को रे । ११ ।

# सप्तमी स्तवन

तर्ज-भीनासर स्वामी अंतरजामी तारो पारसनाथ

( राग माड )

जिनराज हमारे हैं रखवारे भय भंजन भगवान ।
सातम सुखकारे पद अविकारे सेवा शिव सोपान । टेर ।

सातम दिन आराधियें रे जिन कल्याणक सात ।
कल्याणक प्रकटे सदा रे भागे दूर असात रे । १ ।

श्री अनंत श्रावण वदी रे पावन सुद वैशाख ।
धर्मनाथ जिनराज जी रे, दिव्य धर्मतरु शाख रे । २ ।

भादो वद शांति प्रभु रे, जग शांति दातार ।
च्यवन कल्याणक तीन ये रे, वर्तावें जयकार रे । ३ ।

फागुन वद सातम दिने रे, चन्दाप्रभु भगवान ।
चार करम को छेद के रे, पाये केवलज्ञान रे । ४ ।

श्री सुपार्श्व फागुन वदी रे, पाये पद निर्वान ।
चन्दाप्रभु भादो वदी रे, पहूंचे सिद्धिस्थान रे । ५ ।

वीतराग प्रभु ध्यान को, नित करते निष्काम ।
प्रकटे अपने आप ही, आठ सिद्धि अभिराम ।
महोदय पाते हैं ॥ ७ ॥

द्रव्य भाव दो भेद से, पूजा आठ प्रकार ।
करते भविजन पुज्यपद, पाते पुण्य भंडार ।
अशिव मिट जाते हैं ॥ ८ ॥

जीव दया जिन पूजते, स्वयं सिद्ध हो जाय ।
काल लब्धि कारण मिले, करम आठ कट जाय ।
अभय पद पाते हैं ॥ ६ ॥

सुख सागर भगवान वर-बोधि दान दातार ।
जिन हरि पूज्येश्वर नमूं, ज्योतिर्मय जयकार ।
और नहीं भाते हैं ॥ १० ॥

आठम दिन आराधना परमातम पद योग ।
सकल समाराधक वरें सहज सिद्ध सुख भोग ।
'कवीन्द्र' जश गाते हैं ॥ ११ ॥

## नवमी-स्तवन

( तर्ज-छोटे से बलमा मोरे आंगने में )

दिन नवमी जिनराज ध्याने नवनिधि आवे।
खोट रहे नहीं लेश परमातम पद पावे॥ टेर॥

श्री सुविधि भगवान, फागुन वद नवमी में।
च्यवन कल्याणक सार, सुखमय सहज उपावे॥ १॥

वासुपूज्य जग पूज्य, जेठ सुदी नवमी में।
च्यवते सुर सुख भोग, दुख सब दूर गमावें॥ २॥

कुंथुनाथ जिननाथ, श्रावण वद नवमी में।
करते च्यवन सानंद, पूरब पुण्य प्रभावे॥ ३॥

अजित अजित गुणधाम माघ सुदी नवमी में।
दीक्षा कल्याणक भाव, सुरवर जय जय गावें॥ ४॥

सुमति सुमति दातार नवमी सुद वैशाखे।
आषाढ वद नमिनाथ, संयम जीवन ठावे॥ ५॥

सोलम शांतिनाथ, पौष सुदी नवमी में।
पावें केवल ज्ञान, घाती कर्म खपावें॥ ६॥

चैत सुदी पख नोम, शैलेशी वर ध्याने ।
श्री पंचम भगवान, पंचम शिव-गति पावे ॥ ७ ॥

श्री सुव्रत स्वयंबुद्ध, जेठ वदी नवमी में ।
करते करम दल अंत, ज्योति में ज्योति समावे ॥ ८ ॥

नवमे नाथ दयाल, भादो सुद नवमी में ।
सिद्धि वधू सिरताज परमानन्द मनावे ॥ ९ ॥

नव वाड शुद्धे शील, पाले जिन गुण गावे ।
करम भरम जंजाल जड से जीव मिटावे ॥ १० ॥

सुख सागर भगवान, जिन हरि पूज्य प्रभुकी ।
सेवा 'कवीन्द्र' सुखकार अनुपम जग जश छावे ॥ ११ ॥

## दशमी-स्तवन

( तर्ज-छोटी मोटी सुइयां रे जाली का मेरा गूंथना )

धन दशमी दिन रे जिनंद गुण गावना ।
चउगति चक्कर रे भविक नहीं पावना ॥ टेर ॥
मागसिर सुद दिन दशमी में हां दिन दशमी में ।
अर जिन अर्ह रे जनम जयकारना । १ ।

पौष वदी दशमी दिन उत्तम हां दिन उत्तम ।
पास जनम सुखकार घर घर में होत बधावना । २ ।

पास जिनेश्वर पुरुषादानी हां पुरुषा दानी ।
सब गुण खानी रे शरण सुख पावना । ३ ।

सुद दशमी मिगसिर विभु वीर हां सिरे विभु वीर ।
दीक्षा दिव्य गुणठाण विशद वर भावना । ४ ।

परम दया अति घोर तपस्या हां घोर तपस्या ।
अध्यातम अविकार गुणों की आविर्भावना । ५ ।

स्वयं बुद्ध संबुद्ध हुए वीर, बुद्ध हुए वीर ।
वैशाख सुद दशमी रे, केवल ज्ञान उपावना । ६ ।

मिगसर सुद दशमी अर स्वामी, हां शमी अर स्वामी ।
पारंगत पद धार, ज्योति में ज्योति समावना । ७ ।

वैशाख वद में श्री नमि स्वामी, हां श्री नमि स्वामी ।
आनंघन अवतार, फेर न भव में आवना । ८ ।

सुख सागर जिन शासन पावन, शासन पावन ।
दशविध धर्म को धार, कर्मों को दूर हटावना । ९ ।

भगवान जिन हरि पूज्येश्वर की, हां पूज्येश्वर की।
सुविहित आज्ञा सार भविक लय लावना। १०।
मंजुल महिमा विशद यशोगुण, विशद यशोगुण।
मन भर भावे रे चाहें 'कवीन्द्र' गावना। ११।

## एकादशी-स्तवन

( तर्ज-जिन मत का डंका आलम में )

ग्यारस अनुपम रस की नदियाँ,
जिन भक्ति सुधा भर लाती है।
जीवन से पापों की वदियाँ,
अति दूर बहा ले जाती है। टेर।
आतम परदेशों में पावन,
सुकृत सद्गुण वर खेती को।
पैदा करती रस को भरती,
मंजुल महिमा दिखलाती है॥ १॥

आधि व्याधि संतापों को,
हरती कल्याणक लहरों से।
परमातम पुण्य महोदय की,
कमनीय कला प्रकटाती है ॥ २ ॥

मिगसिर सुद मल्ली जनम जयो,
अजरामर पद सुविकाश भयो।
जग सुख परकाश चढ़ाने से,
ग्यारस गरिमा मन भाती है ॥ ३ ॥

मिगसिर सुद अर जिन मल्लि प्रभु-
वद पौष में पारस नाथ विभु।
दुख हर दीक्षा लेते ग्यारस-
सुखकर शिक्षा सिखलाती है ॥ ४ ॥

फागुन वद में आदीश्वर जिन-
सुद पोष अजित जय जय कारी।
सुद चैत सुमति सुमति दाता
केवल वर ग्यारस लाती है ॥ ५ ॥

केवल पाये अर मल्लि प्रभु-
इक्कीसम श्री नमि जिनराजा।
मिगसर सुद ग्यारस पर्वोत्तम-
पदवी जिन मुख से पाती है॥ ६ ॥

पांच भरत पांच ऐरवरत-
में पांच पांच कल्याणक यों।
पचास कल्याणक लीला से,
मिगसर सुद ग्यारस माती है॥ ७ ॥

डेढ़ सौ कल्याणक मिगसर सुद,
तीनों कालों की गिनती से।
यों अनंत कल्याण अनंत काल से,
ग्यारस पाती जाती है॥ ८ ॥

आराधन भविजन करते हैं,
निज पुण्य भंडारा भरते हैं।
ग्यारस सुखसागर की सीमा
सुख सुषमा से सरसाती है॥ ९ ॥

आबाल ब्रह्मचारी नेमि-
हरि पूज्य जिनेश्वर फरमावें।
यह ग्यारस मौन सहित साधे
भव भय को दूर भगाती है ॥ १० ॥
ग्यारह प्रतिमा धारी ग्यारह-
अंगों के पाठी ग्यारस के।
आराधक की गुणकीर्ति कथा
'सुकवीन्द्र' कला दरसाती है ॥ ११ ॥

## द्वादशी-स्तवन

( तर्ज-शेत्रुंजारो वासी प्यारो लागे मोरा राजिंदा )

वारस दिन जिन पूजो भवि रसिया
पूजो भवि रसिया पूजो भवि रसिया। टेर।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव में-
क्षय-उपशम वर भाव फरसिया। १।
जिन कल्याणक जग कल्याणक-
आराधक गुण सहज विकसिया। २।

सुद वैशाख विमल वद काती
नेमि च्यवन कल्याण सरसिया । ३ ।

पद्म प्रभु वद काती सुपारस
जेठ सुदी जग जीव हरसिया । ४ ।

पौष वदी चन्दाप्रभु शीतल–
माघ वदी सुख सहज वरसिया । ५ ।

श्री श्रेयांस फागुण वदी बारस
जनम कल्याणक पुण्य विलसिया । ६ ।

माघ सुदी अभिनंदन शीतल
माघ वदी दिन आतम हुलसिया । ७ ।

मुनिसुव्रत सुद बारस फागुन
दीक्षा दिव्य कल्याण दरसिया । ८ ।

कार्तिक सुद बारस अति सुखकर
श्री अर जिन वर मोह विनसिया । ६ ।

फागुन सुद बारस मुनि सुव्रत–
ज्ञान कल्याणक कर्म करसिया । १० ।

फागुन सुद मल्ली पारंगत-
सुख सागर शिव नगर निवसिया । ११ ।
बारह भिक्षु प्रतिमा साधक
बारह अंग सज्झाय सुरसिया । १२ ।
बारह नाम विराजित सिद्धि
सिद्धरूप भगवत गुण लसिया । १३ ।
जिन हरि पूज्य दयामय सेवा
मेवा पा भविजन मन हसिया । १४ ।
जिन पद आराधक जन-कीरति
सुमति 'कवीन्द्र' करें धसमसिया । १५ ।

## त्रयोदशी-स्तवन

( तर्ज-सुना दे सुना दे सुना दे किसना )

मिटा दो मिटा दो मिटा दो भगवन्
काठिये तेर मिटा दो भगवन् । टेर ।
तेरस दिन विन पूछे मुहरत
आराधक जिन मारग विहरत ।

सेवा अपनी दिला दो भगवन् !
दिला दो दिला दो दिला दो भगवन् । १ ।
कल्याणक दिन तेरस उत्तम
कल्याणक वर साधें सत्तम ।
हमें कल्याण सधा दो भगवन्
सधा दो सधा दो सधा दो भगवन् । २ ।
च्यवन कल्याणक सुद वैशाखे
अजित जिनेश्वर जग सुख चाखे ।
हमें उस सुख को चखा दो भगवन्
चखा दो चखा दो चखा दो भगवन् । ३ ।
आसोवद श्री वीर कल्याणक
गर्भहरण वर पुण्य प्रधानक ।
पुण्य हमारे बढ़ा दो भगवन्
बढ़ा दो बढ़ा दो बढ़ा दो भगवन् । ४ ।
अनंत वद वैशाख मनोहर
जेठ वदी शांति शांति कर ।
शांति हमारी करा दो भगवन्
करा दो करा दो करा दो भगवन् । ५ ।

चैत वदी महावीर जयंती
जन्म कल्याण तिथि जयवंती।
हमारी जयंती बना दो भगवन्
बना दो बना दो बना दो भगवन्। ६।

पद्म प्रभ काती वद तेरस
जेठ वदी में नाथ सुपारस।
चरण में अपने लगा दो भगवन्
लगा दो लगा दो लगा दो भगवन्। ७।

फागुन वद में श्रेयांस जिनवर
माघ सुदी धर्म दीक्षा शुभंकर।
धर्म की दीक्षा दिला दो भगवन्
दिला दो दिला दो दिला दो भगवन्। ८।

माघ वदी में मेरु तेरस
ऋषभ जिनेश्वर भोगें शिवरस।
कुछ शिव रस को पिला दो भगवन्
पिला दो पिला दो पिला दो भगवन्। ९।

जेठ वदी तेरस पारंगत
शांति प्रभु सुख सागर रंगत।
नाथ दयालु दिखा दो भगवन्
दिखा दो दिखा दो दिखा दो भगवन् ।१०।

जिन हरि पूज्य शरण में आया
सुमति कवीन्द्र सुखद गुण गाया।
शुभ गुण पाना सिखा दो भगवन्
सिखा दो सिखा दो सिखा दो भगवन् ।११।

## चतुर्दशी-स्तवन

( तर्ज-जावो जावो ए मेरे साधु रहो गुरु के संग )

गावो गावो चौदस दिन पावन जिन गुण उत्तम गीत।
पावो पावो परमातम पदवी दर्शक प्रभुपद प्रीत। टेर।
कल्याणक तिथि चौदश जग में चउगति चूरणहार।
जिन आज्ञा आराधन भविजन भवजल तारण हार ॥१॥

माघ सुदी संभव जिन वंदो, वासुपूज्य भगवान ।
फागुण सुद में वद वैशाखे, कुंथु जनम कल्यान ॥२॥

वद वैशाखे अनंत जिनवर, दें संवत्सर दान ।
जेठ वदी में शांति जिनेश्वर, दीक्षा पुण्य प्रधान ॥३॥

पौष सुदी अभिनंदन शीतल–पौष वदी जयकार ।
वद वैशाखे अनंत केवल–ज्ञान कल्याणक सार ॥४॥

सुद आषाढ चौदश पारंगत, वासुपूज्य अविकार ।
सुखसागर भगवान दयालु–जग जीवन आधार ॥५॥

जिन हरि पूज्य प्रभु शासन में–वासित चित्त उदार ।
चढते चउदश में गुणठाणे–क्रम से नर और नार ॥६॥

अगम अगोचर अजरामर पद सिद्ध होंय निर्द्धार ।
सुमति कवीन्द्र सदा गुण गाते पाते मोद अपार ॥७॥

## पूर्णिमा-स्तवन

( तर्ज-मैं वन की चिड़िया वन के वनवन डोलूं रे )

धन आज पूर्णिमा पावन जिन जय बोलूं रे।
जिनदेव प्रतिष्ठित निज मन मंदिर खोलूं रे ॥टेर॥

प्रभु हृदय सिंहासन राजें,
जहँ अनहद बाजा बाजें।
एकान्त भाव परमात्म दाव,
सुख सागर जिन जय बोलूं रे ॥१॥

पूनम दिन पुण्य प्रभाते,
जिन कल्याणक जन गाते।
कट जाय फंद आनंदकंद,
जयकारी जिन जय बोलूं रे ॥२॥

आसोज की पूनम भारी,
च्यवते सुविधि सुखकारी।
होत अशोक तीनों ही लोक,
हितकारी जिन जय बोलूं रे ॥३॥

श्रावण पूनम सुव्रत जिन,
च्यवते जानो वह धन दिन।
फैला प्रकाश, शुभ गुण विकाश
कारक श्री जिन जय बोलूं रे ॥४॥

मिगसर पूनम जिन संभव,
दीक्षा ले हरते भव दव।
श्रीवीतराग निज गुण पराग,
विस्तारक जिन जय बोलूं रे ॥५॥

प्रभु धर्म पौष पूनम में,
कर करम घात जीवन में।
केवल विलास अनुपम उजास,
फैलाते जिन जय बोलूं रे ॥६॥

आराधक जन अभिरामी,
सुख भोगें सुगति गामी।
पूनम विवेक, आदर्श एक,
उपकारी जिन जय बोलूं रे ॥७॥

पूनम दिन महीना पूरण,
जिन दर्शन आशा पूरण।
तज राग रोष जीवन अदोष कर,
प्रभुवर जिन जय बोलूं रे ॥८॥

पूनम सिद्धाचल वन्दन—
कर्मों का करे निकंदन।
साधु अनंत शिव पद लसंत,
पाये नित जिन जय बोलूं रे ॥९॥

श्री जिनहरि पूज्य दयालु—
आराधूं आज्ञा पालूं।
देवाधिदेव, मन शुद्ध सेव,
निर्भय हो जिन जय बोलूं रे ॥१०॥

रवि शशि ज्योति से बढ़ कर,
पाउं में ज्योति विशद वर।
सुमति 'कवीन्द्र' गावें अतंद्र,
परमेश्वर जिन जय बोलूं रे ॥११॥

## अमावस्या-स्तवन

( तर्ज-धन हो ऋषभदेव भगवान युगला धर्म निवारणवाले )

वन्दूं वीतराग भगवान, राग द्वेष मिटानेवाले।
अमावस दिन साधन सुखकार, वंदूं परमातम पदवाले ।टेर।

कल्याणक कमनीय विलास, आराधन से पुण्य प्रकाश।
प्रकटे निज अनंत गुण खास, दुर्गुण दूर हटानेवाले ।१।

फागुन अमावस दिन सार, वासुपूज्य प्रभु अविकार।
दीक्षा लें छोड़ें संसार, संवर भाव समाधिवाले ।२।

श्री श्रेयांस अमावस माघ, मेटे भव दुख घोर निदाघ।
कल्याणक केवल अस्ताध, धारें कर्म निवारणवाले ।३।

यदुकुल तिलक नेमि भगवान, मारें काम महा बलवान।
आसो अमावस में ज्ञान-सर्वज्ञोत्तम पदवीवाले ।४।

काती अमावस में वीर, पारंगत भवजल निधि तीर।
ध्यावें धन उनकी तकदीर, धीर-गंभीर बनानेवाले ।५।

वर्ते महावीर भगवान-शासन सुविहित विविध विधान।
आराधें नर अमृत पान-करते शिवपुर जानेवाले ।६।

श्रीवीर प्रभु पटधार, गौतम केवल ज्ञान उदार।
दीवाली दिन जय जयकार, प्रणमूं वांछित पूरणवाले ।७।

स्वामी श्री सुधर्म गणधार, सुविहित पाट परंपर सार।
पालक खरतर विधि आचार, सच्चा मार्ग बतानेवाले ।८।

पाठक पूज्य क्षमा कल्यान-गणपति सुखसागर भगवान।
श्रीजिनहरि सागर सद्गुरु ज्ञान-संप्रति शासन करनेवाले ।९।

बीकानेर अजित अरिहंत, पावन दर्शन जय जयवंत।
परम गुरुदया अनंत अनंत-पुण्य पराग बढानेवाले ।१०।

अनुभव रस नवनिधि भूमान-दिव्य कवीन्द्र करे गुणगान।
करते सुमति तन्मयतान-नवपद पूरण सिद्धिवाले ।११।

—:००:—

# श्री चौवीस जिन स्तुति

## श्री ऋषभ-स्तुति

वृषलंछन कंचन काया अद्भुत रूप,
मरुदेवा नंदन जगवंदन जग भूप।
नृप नाभि कुलाम्बर अंबरमणि अनुरूप,
नित वंदूं भावे निज गुण दाव अनूप ॥ १ ॥

कर्मों की काली घटा अनादि काल,
आतम सूरज के आडी अडी कराल।
वर ध्यान पवन से विघटे प्रकटे ज्योति
सिद्धातम वंदूं जगे चेतना सोती ॥ २ ॥

नैगम आदिक नय-निर्भय भाव त्रिशल,
प्रतिवादि भयंकर जिन आगम संदेश।

सुनकर आराधूं साधूं आत्म प्रदेश,
स्वाधीन सुखों का स्वामी बनूं हमेश ॥ ३ ॥

जिन शासन पावन सुखसागर-भगवान्,
'हरि' पूजित जगमें करुणा-गुणपरधान ।
आराधक जन की आधिव्याधि उपाधि,
वारे चक्रेश्वरी देवे परम समाधि ॥ ४ ॥

## श्री अजित-स्तुति

सार्थक नाना श्री अजितनाथ भगवान
विजया जितशत्रु-सुत गुणवान महान ।
गजराज विराजे चिन्ह चरण जयकार
अजरामर महिमामय वन्दूं अविकार ॥ १ ॥

है द्रव्य सरूपी चेतन एक अनंत,
कर्मों से घेरा भव-वन में भटकंत ।
संसारी संयम दिव्य साधना साध,
सिद्धि गति पाये वंदू अव्याबाध ॥ २ ॥

त्रिभुवन उपकारी गुण अनंत भंडार
प्रवचन जिन शासन सांगोपांग उदार।
परमाण प्रमाणित निसर्ग श्रद्धामूल
गुरुगम आराधूं शिवसाधन अनुकूल ॥ ३ ॥

सुखसागर भयहर अजित अजित भगवान
'हरि' पूजित पदवी बोधिलाभ दें दान।
तसु शासन देवी अजितबला शुभ नाम
भक्तों को बल दे पूरे वंछित काम ॥ ४ ॥

## श्री संभव स्तुति

सुखसागर संभव जिननायक भगवान
प्रभु परम दयालु स्वयं बुद्ध-विज्ञान।
जितारि-सेना नंदन नन्दन—सार
चन्दन कर भावे करूं भवोदधि पार ॥ १ ॥

घाती कर्मों का मर्म भेद प्रस्ताव
गुणठाण सयोगी-केवल ज्ञान प्रभाव।
अवलोकें लोकालोक त्रिकालिक भाव
अरिहंत नमूं नित श्रीअरिहंत पददाव ॥ २ ॥

शुभ समवसरण में प्रवचन पुण्य प्रबन्ध
प्रकटावें प्रभुवर तीर्थ कर्म संबंध।
पुण्यातम प्राणी निज पुण्योदय सार
तीरथ आराधें तिर जावें संसार ॥ ३ ॥

जिन शासनवासित अध्यातम अधिकारी
श्री संघ चतुर्विध पुण्य प्रभावक भारी।
उनके सहधर्मी सुर 'गणपति हरि' आप
शिवमार्ग सहायक हो हरते संताप ॥ ४ ॥

## श्री अभिनन्दन-स्तुति

जिनवर अभिनंदन—अभिनंदन मैं आज
करता हूं स्वामी सुन लो गरीब नवाज।

प्रभु पदपंकज में है मेरा अनुराग
दो मुझको प्रभुवर सेवा सुखद पराग ॥ १ ॥

क्षायिक वर मंगल भाव रमण गुणधारी
क्षायिक लब्धि से सुखसागर अविकारी ।
आतम परमातम–पदवी पाये धन्य
नित ध्याउं उनको तन्मय-भाव अनन्य ॥ २ ॥

अरिहंत अरथ से उपदेशे गणधारी
सूत्रों में गूंथे श्रुतज्ञानी उपकारी ।
क्षायोपशामिक वर भावे प्रवचन सार
आराधक पावे शिवसुख अपरंपार ॥ ३ ॥

जिन परम दयालु स्वयंबुद्ध भगवान,
शासन दिखलाया धारें भवि गुणवान ।
सुर "गणनायक हरि" गावें महिमा नित्य,
दुख दोहग मेटें प्रकटावें सुख सत्य ॥ ४ ॥

## श्रीसुमति-स्तुतिः

सुमति दो सुमति स्वामी सुमति नाथ
सुमति शक्ति विन मैं हूं दीन अनाथ ।
कुमति का घेरा भटका काल अनाद
सुमति देकर अव दूर करो अवसाद ॥ १ ॥

हैं सुमति कारण सुखसागर भगवान,
सेवक जन पावें सुमति ज्ञान महान ।
वह ज्ञान अनुक्रम होत अनंतानंत,
प्रस्तुत ज्योतिर्मय वंदूं श्री अरिहंत ॥ २ ॥

सुमति पूर्वक ही सम्यक् हो श्रुतज्ञान,
जहँ रहें अनन्ते गम-पर्याय प्रधान ।
उपदेश दयामय संयम-तपमय धर्म
सेवूं सुमतिश्रुत, पाउं मैं शिवशर्म ॥ ३ ॥

'श्रीजिन-हरि' पूजित-आज्ञालम्बी जीव,
मजबूत बनावें निज जीवन गृह नींव ।

सुर ललना ललिता उनके प्रति अनुराग
धारें जग फैले पावन सुमति-पराग ॥ ४ ॥

## श्रीपद्मप्रभ-स्तुति

निश्छद्म अशठ जो धीर वीर गंभीर
श्रीपद्मप्रभु को सेवें वे नरहीर।
छद्मस्थ पणे से रहित होय ततकाल
उनसे हट जावे काल महा विकराल ॥ १ ॥

कर्मों ने घेरें आत्म द्रव्य प्रदेश,
परतंत्र दशा में यातें रहे हमेश।
वल वीर्य पराक्रम दिखला कर स्वाधीन
जो सिद्ध हुए हैं नमूं भक्ति में लीन ॥ २ ॥

नवजीवनदाता रसमय रत्नप्रधान
गम भंग विराजित धीवर जन सुस्थान।
मर्यादा पूरण पावन रूप महान
आगम सुख सागर सेवूं विविध विधान ॥ ३ ॥

भगवान दयालु 'जिन हरि' पूज्य विशेष
जन वोधिविधाता शासन विगत कलेश ।
आराधक चउविध संघ महोदय सार
सम्यग् दृष्टि सुर असुर करें जयकार ॥ ४ ॥

## श्री सुपार्श्व-स्तुति

सप्तम जिन वंदूं श्री सुपार्श्व भगवान्
भव सातों भागें जागें जीवन प्रान ।
सुखसिंधु तरंगों में भवभावी ताप
वह जावे पावे आतम शांति अमाप ॥ १ ॥

वीस स्थानक तप भव तीजे आराध
जिन नाम करम शुभ वांधें अव्यावाध ।
तीरथ वर्तावें दयाधर्म अधिकारी
तीर्थंकर वंदूं वीतराग जयकारी ॥ २ ॥

षट् द्रव्य जगत में ज्ञेयादिक परिणाम,
रूपी व अरूपी आपरूप अभिराम।
ज्ञानी गुणखाणी जाणे परतिख भाव
अनुयायी परोक्षागम उपदेश प्रभाव ॥ ३ ॥

'श्री जिन हरि' पूजित शासन भाव अनेक
आराधें भविजन अनुपम पुण्य विवेक।
शासन रक्षक सुर-सुरी करें नित सार
दुख हर भर देवें सुख संपति भण्डार ॥ ४ ॥

## श्री चन्द्रप्रभ-स्तुतिः

निर्दोष महोदय सकल सुवृत्त सुगीत
मित्रोदय महिमा पुर्णोल्लास पुनीत।
अमृतमय अद्भुत निष्कलंक गुणधाम
श्री चंद्रप्रभ जिन वंदूं भावोद्दाम ॥ १ ॥

आतम सुखसागर लीन पीन गुणवान्
स्वाधीन परमपद सेवी श्री भगवान्।

अपुनर्भवभावी सिद्धवधु सिरताज
वंदू चिरनंदुं, सिद्धि सिद्धि सुख काज ॥ २ ॥

हैं धर्मा धर्माकाश अरूप अजीव
पुद्गल है रूपी चेतन लक्षण जीव ।
ये पांचों अस्तिकाय विशेषी काल
है छट्ठा धन धन जिन आगम की चाल ॥ ३ ॥

'श्री जिनहरि' पूजित त्रिभुवन नायक देव
आराधक बुद्धे करते भविजन सेव ।
सुर असुर करे नित उनकी सेवा सार
दें शुद्ध समाधि बोधि विशद विचार ॥ ४ ॥

## श्री सुविधि-स्तुति

सुविहित विधि से जो सुविधिनाथ भगवान
पूजें तव धूजें कर्म महा बलवान् ।
प्रभु पूजा के हैं द्रव्य भाव दो भेद
पूजक जन के जो दूर करें सब खेद ॥ १ ॥

हैं नाम थापना द्रव्य निक्षेपा भाव

ये चारों सच्चे तात्विक वस्तु सुझाव ।

विन माने इनके सिद्ध स्वरूप विचार

नहीं हो सकता है नमो निक्षेपा चार ॥ २ ॥

प्रभु-नाम को रटते आवे भाव उदार

प्रभुप्रतिमा दर्शन में त्यों अधिक अपार ।

है द्रव्य निक्षेपे भूत भविष्य विचार

जिन आगम गावे सुनो सुघर नरनार ॥ ३ ॥

सुखसिन्धु दयालु परम पूज्य भगवान

'श्रीजिनहरि' पूजित बोधि धरम गुणखान ।

आराधक अविरल भाव भविक दुख पीर

हरते सहधर्मी सुर वर कर तदवीर ॥ ४ ॥

"नहीं एक चने से हरगिज फूटे भाड"
जिन आगम गावें पांचों को लो ताड ॥ ३ ॥

अनहद सुखसागर है आतम भगवान्
'श्रीजिन हरि' पूजित सेवो सुखद विधान ।
सुर असुर सहायक होवें हो कल्यान
मिट जाय अनंती अंतराय संतान ॥ ४ ॥

## श्री वासुपूज्य-स्तुति

वन्दूं प्रभु वासुपूज्य पूज्य भगवान
पूजक जनके जो पूज्य सुभाव निदान ।
जिनदेव दयामय स्वयंवुद्ध अवतार
भविकारज सिद्धि कारण अव्यभिचार ॥ १ ॥

प्रतिहारज आठों समवसरण सुखकार
नहीं वीतरागता बाधक लेश विकार ।
यातें भवि पूजो द्रव्य-भाव अधिकार
पाओगे पावन पूज्येश्वर पद सार ॥ २ ॥

ठाणांगे चारों निक्षेपे कहे सत्य
भ्रम भेद मिटा दो सुन लो आगम सत्य ।
सुर पूजें तैसे पूजो भक्ति उदार
भगवत्यादिक में भाख्यो विधि विस्तार ॥३॥

'श्री जिन हरि' पूजित सुखसागर अनुरूप
शासन में वर्तो हो जावो गुण भूप ।
सुर असुर तुम्हारे बनें दास के दास
प्रकटावें सुखमय अनुपम पुण्य विलास ॥ ४ ॥

## श्री विमल-स्तुति

सब जीव जगत के हों शासन अनुयायी
यह भव्य भावना धारें भाव असायी ।
भव कर्म मलिन तम सब मल दूर निवारें
प्रभु विमल विमलता त्रिभुवन में विस्तारें ॥१॥

पुण्यानुबंधी पुण्य कर्म जिन नाम,
बीश स्थानक तप सेवी पायें तमाम ।

तीर्थंकर तीरथ जगजन तारण हार
प्रकटावें वंदूं जिन वन्दन जयकार ॥ २ ॥

वर ज्ञाता अंगे वीरास्थान विधान
भाखें सुखसागर तीर्थंकर भगवान ।
गुरु गम से जानो आराधो अधिकारी
जिन आगम सुविहित साधक की बलिहारी ॥३॥

'श्रीजिन हरि' पूजित धर्म-हृदय में धार,
चौथे गुणठाण बोधि उपाव उदार ।
संयम श्रेणि चढ करें सुरासुर सेव,
होते हैं सुव्रति-जन के सेवक देव ॥ ४ ॥

## श्री अनंत-स्तुति

वंदूं नित भावे-तीरथ नाथ अनंत
नामानुसारे-धारें ज्ञान अनंत ।
आतम बल-योगे-किया करम का अंत
सुख सिंधु दयामय भयहारी भगवंत ॥ १ ॥

हैं जीव ठिकाने मिथ्या दृष्टि आदि
चौदह गुण चढते पाते निज आजादी ।
चौदह रज्जुमित लोक अंत में जाय
वंदूं उनको जो ज्योति में ज्योति समाय ॥२॥

कहो जीव ठिकाने या कह दो गुणठाण
जीवों में होते आगम वचन प्रमाण ।
मिथ्या आदि में अयोगि केवल अंत
भव अंत अंत में प्रकटे पद जयवंत ॥ ३ ॥

'श्रीजिन हरि' पूजित बोधिलाभ को पाय
भले कहीं रहो पर शुक्ल पक्षी हो जाय ।
साधर्मी सुरासुर सारे वांछित काज
अनुपम सुख प्रकटे निज घर अविचल राज ॥४॥

## श्री धर्म-स्तुति

प्रभु धर्म जिनेश्वर आत्म धर्म के नाथ
करते औरों को हां जो उनके साथ ।

पनरम जिन सेव्यां पनरह परमाधामी
दुख दें न कदापि होवें त्रिभुवन स्वामी ॥१॥

कर धर्माधर्माकाश प्रदेश संबंध
चर सादि अनंते भांगे भाव अबंध
लोकान्ते वासी सिद्ध अनन्तानन्त
सुख सागर वंदूं दें सुख मुझे अनंत ॥ २ ॥

उत्पाद व्यय दो पर्यायार्थिक भेद
ध्रुवता द्रव्यार्थिक नय मत एक अभेद ।
त्रिपदी परणत हैं द्रव्य छहों सद्रूप
आगम से प्रकटे अनुभव अमृत कूप ॥ ३ ॥

'श्रीजिन हरि' पूजित दयामयी भगवान्
त्रिभुवन में अद्भुत भव तारक विज्ञान ।
आज्ञा अवलम्बित जीवन भाव प्रशस्त
विन मांगे देवें वांछित देव समस्त ॥ ४ ॥

# श्री शांति-स्तुति

श्री शांति जिनेश्वर परम शान्ति दातार
यह जीव अनादि कारण पाकर चार।
कर्मों के वश में रहे सदैव अशांत
शांति प्रभु सेवत होवे परम प्रशान्त ॥ १ ॥

मिथ्यात्व अविरति कषाय योग संयोग
यह जीव हमेशा रहा करम फल भोग।
सम्यग् दर्शन युत ज्ञान चारित्र संबंध
शिव पद को साधे वंदूं सिद्ध अबंध ॥ २ ॥

ये चारों हेतु जिन आगम में देख
त्यागे जन धन वे पावें पुण्य सुरेख।
गुरुदेव दया से अथवा भाव निसर्ग
बोधि उत्तरोत्तर जयतु ज्योति अपवर्ग ॥३॥

निष्कारण वन्धु सुखसिन्धु भगवान्
'श्रीजिन हरि' पूजित शासन दिव्य विमान ।
चढते भविजन झट पावें पद कल्यान
सुर सेवा सारें सहज सिद्ध उत्थान ॥ ४ ॥

## श्री कुन्थु-स्तुति

चक्री तीर्थंकर दो पद पुण्य प्रताप
परमेष्ठी पांचों पद भी धारें आप ।
कुन्थु प्रभु वंदूं पार करो मां वाप
अव सहा न जाता मुझ से भव संताप ॥ १ ॥

ज्ञानावरणी की पांचों देवें छेद
दर्शन की नव से करें आत्म का भेद ।
मोहनी अडवीसों पांचों ही अंतराय
मेटे पद अरिहंत वंदूं भाव अमाय ॥ २ ॥

वेदनी की दोनों आयु कर्म की चार
शत तीन नाम की गोत्र की दो दें टार ।
सिद्धातम होवें आगम के अनुसार
धन वह दिन पाउं जन्म सफल संसार ॥ ३ ॥

आतम सुखसिन्धु भय हारी भगवान
'श्रीजिन हरि' पूजित शासन सुखद विधान ।
सुविहित जो सेवें, सेवें देव तमाम
दुख दूर निवारे पूरें वांछित काम ॥ ४ ॥

## श्री अरजिन-स्तुतिः

अरजिन अरिहंता कर्म अरि कर नाश
स्वाधीन सुखों में करते आप विलास ।
हम दास प्रभु के जान कर्म बलवान
बदला ले हमसे स्वामी सुनो सुजान ॥ १ ॥

उन कर्मों को हम कैसे मेटे नाथ
दिखला दो आकर या रख लो निज साथ ।

है यही आप से एक विनय अरदास
सुन लो हे भगवन जानो आप प्रकाश ॥ २ ॥

सुख सिन्धु जिनागम गुरुगम जानो खास
होगा बस तुम में अनुभव पूर्ण विकाश।
कर्मों का करना अंत सबल संयोग
क्या पराधीन भी पाते हैं सुख भोग ? ॥३॥

'श्रीजिन हरि' पूजित शासन दया प्रधान
बुध जन आराधें पावें पुण्य निधान।
सेवा करते सुर असुर अकारण आप
मिट जावें फिर तो जीवन पाप संताप ॥४॥

## श्री मल्लीजिन-स्तुति

संसार अखाडा मोहमल्ल आधीन
दुख देत सभी को भवदुख देन प्रवीन।
मल्ली प्रभु दर्शन डरा भगा वह दास
वन छिपा कायरों के समूह में खास ॥ १ ॥

नर हो या नारी पनरह भेदे सिद्ध
कर्मों को खपाते है यह बात प्रसिद्ध ।
नवमे गुणठाणे भाव वेद हों नाश
वर क्षपक श्रेणिमें वंदू सिद्ध प्रकाश ॥ २ ॥

स्त्री पुरुष नपुंसक ये तीनों ही वेद
हैं नोकषाय ये मोह कर्म के भेद ।
आगम से जानो त्यागो संयम धार
सुखसागर में फिर वास करो निर्द्धार ॥ ३ ॥

भगवान अवेदी 'जिन हरि' पूज्य विशेष
शासन वर्तावें धारें भविक हमेश ।
सुर असुर निवारें रोग शोक संताप
सुख भोग उन्हीं को देवें इच्छित धाप ॥४॥

## श्री मुनिसुव्रत जिन-स्तुति

जय जय मुनि सुव्रत सुव्रत पद दातार
जय जय सुखसागर दुख हारी अवतार ।

जय मोह शनिश्चर खलबल दलन उदार
भगवान बचावो अपना विरुद संभार ॥ १ ॥

सुव्रत संयम वर सद्गुण निधि आधार
निज बोधि शुभंकर प्रभु दर्शन सुखकार ।
निर्भय पद पाते आतम सिद्धि सुराज
सिद्धों को वंदू गुण गाउं घन गाज ॥ २ ॥

सुव्रत आते ही अविरत भाव विनाश
मिथ्यात्व विचारा रहा न पहेले पास ।
हो कषाय योगों का भी क्रम से रोध
जिन आगम दर्शित प्रकटे पद अविरोध ॥३॥

'हरि' पूज्य विजयी जिन शासन वासित देव
भाविक जन की नित सारें सुखकर सेव ।
वन भवन बनावें शत्रु मित्र समान
सागर केलिद्रह विष को अमृत पान ॥ ४ ॥

# श्री नमि जिन स्तुति

नमिनाथ दयालु ! काम कषायाधीन

भूला दुख पाया भव वन में मैं दीन ।

बीतक क्या बोलूं जानो ज्ञानी आप

क्या कहना सुनना दे दो दर्शन छाप ॥ १ ॥

दर्शन की जिनके लगी हृदय में छाप

निश्चय से मानूं उनका पुण्य प्रताप ।

अति बढा चढा है नहीं घटने का काम

उनको हो मेरा प्रतिपल भाव प्रणाम ॥ २ ॥

दर्शन सुखसागर दर्शन पद भगवान

दर्शन दर्शन मतवादी कहें अजान ।

दुनिया के दर्शन जीव बिना की देह

जिन दर्शन ही है जीवन दायक एह ॥ ३ ॥

जिन दर्शन महिमा गाते 'हरि' अमंद
पूरण नहीं होती पावें परमानंद ।
जिन दर्शन वालों से नित राखे राग
बढता है उनका जीवन कमल पराग ॥ ४ ॥

## श्री नेमीश्वर स्तुति

श्रीनेमि जिनेश्वर जीवन परम रहस्य
जो जानें पावें अद्भुत सिद्धि अवश्य ।
श्रीराजिमती धन सती शिरोमणि सार
प्रभु से कर जाना प्रेम अभेद विचार ॥ १ ॥

प्रेमी से करना प्रेम सहज है बात
पर निस्नेही से चमत्कार अवदात ।
यह एक हथाली ताली न्याय समान
करते सो वरते सुखकर सिद्धि निधान ॥ २ ॥

जग प्रीति रीति स्वार्थ मोह से लीन
निस्नेही प्रभु से निस्वारथ गुणपीन ।

जिन आगम विधि से जाने जो सविवेक
नित करूं उन्हीं को वंदन वार अनेक ॥३॥

सुखसिंधु सम्यक् बोधदायि भगवान
'हरि' पूज्येश्वर जिन-शासन प्रेम प्रधान ।
समझें, आराधें उनके पुण्य सहाय,
सुर असुर करें नित विघ्न विशेष विलाय ॥४॥

## श्री पार्श्वजिन स्तुति

पाखंड मिटा दो होकर निर्भय वीर
जहरीलों पर भी दया करो गुणधीर ।
अपने दुश्मन पर क्षमा करो आदर्श
समझावें स्वामी पार्श्व नमूं बहु हर्ष ॥ १ ॥

जो पर उपकारी नरपुंगव गुणधाम
होते हैं जगमें जीवन भावोद्दाम ।
दीपक-रवि शशी सम तम हरते दिनरात
उनकी पद सेवा पाऊं पुण्य प्रभात ॥ २ ॥

जो विषम विरोधी को भी दे सनमान
सब धर्म समन्वय करता साधु निधान।
नयवादों से भी जिसका उंचा थान
जिन आगम वंदूं स्यादवाद महान् ॥ ३ ॥

सुखसिन्धु सुखाकर पुरुषोत्तम भगवान्
'हरि' पूजित श्रीजिनपारसपद वर ध्यान।
ध्याता भविजन को चिंतामणि समान
पदमा धरणीन्दर देवें वांछित दान ॥ ४ ॥

## श्री वीर जिन-स्तुति

सिद्धरथ नंदन ज्ञात वंश अवतंस
श्री त्रिशला माता कुक्षी-मानस हंस।
जय वर्द्धमान जय महावीर भगवान
जय शासन नायक मेरे जीवन प्रान ॥ १ ॥

प्रभु महातपस्वी दयाधर्म आधार
जग जीव मात्र का करने को उपकार।

ज्योतिर्मय जन्में सुना अमर संदेश
सिद्धातम होते वन्दूं उन्हें हमेश ॥ २ ॥

संयमी जन होवें वर्ण गुरु जग धन्य
सुख दुख का कर्ता हर्त्ता जीव न अन्य ।
सब में ईश्वरता शक्ति रूप समान
वर बोधिविधाता जयतु जिनागम ज्ञान ॥३॥

सुविहित खरतर विधि सुखसिन्धु भगवान् ।
श्रीजिन शासन 'हरि-सागर-सूर' समान ।
भवि भयगज भेदन, सुखनीरद-वर-हेतु
तम तोम निवारण, नमो भवोदधि सेतु ॥४॥

# श्री कार्तिक पूर्णिमा विधि

कार्तिकेय-पूर्णिमायां–दशकोटि मिताः शिवम् ।
द्राविड वालिखिल्लाद्या–गता स्तान्नौमि भावतः ॥

कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी के पौत्र द्राविड़ और वारिखिल्ल प्रमुख दशकोटि मुनि श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज पर मुक्ति को गये, उनको नमस्कार करता हूं।

श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज की कार्तिक पूर्णिमा के दिन यात्रा करने से दस कोड गुना फल मिलता है। इस लिये भव्यात्माओं को–कार्तिक पूर्णिमा की आराधना इस प्रकार करनी चाहिये।

कार्तिक वदी एकम से शत्रुंजय रास नित्य सुने। नीवी एकासन बियासन आदि कोई तप करे। दोनों

टंक प्रतिक्रमण करे। देव वंदनादि करे। "ॐ ह्रीं श्री सिद्ध क्षेत्र अनंत सिद्धाय नमः" इस पद की बीस माला नित्य गिने। शक्ति हो तो सिद्धगिरि यात्रा को जाय। कार्तिक पूर्णिमा को विस्तृत श्री सिद्धगिरि पूजा की रचना करे। अष्टाह्निका महोत्सव करे। विस्तृत देव वंदना करे। २१ बार शत्रुंजय रास सुने। 'ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अनंत सिद्धाय नमः' इस पद से नमस्कार करे। शक्ति के अभाव में जहां सिद्धगिरि का पट मंडित हो वहां जाकर ऊपर लिखी विधि संक्षेप या विस्तार से करे। चौथ-भक्त उपवास-बेला आदि तप करे। गुरुभक्ति करे। साधर्मी वात्सल्य करे। विधि पूर्वक सिद्धगिरि के सेवन से अशुभ कर्मों का नाश होता है और मंगलमाला वर्तती है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन—सिद्धगिरि पर या पट के सन्मुख पांच चैत्यवन्दन करे—वे इस प्रकार हैं।

## श्री तलहट्टी-चैत्यवन्दन

सिद्धाचल संसार में–सिद्धि हेतु अभिराम।
निजगुण सिद्धि निमित्त से–प्रतिदिन करूं प्रणाम ॥१॥
सोरठ देश विशेष धन, पावन जन विश्राम।
सिद्ध अनंत हुए जहां, सिद्धाचल गुणधाम ॥२॥
दर्शन वंदन स्पर्शना, करते तीरथ राज।
देते सुर-'गणनाथ हरि'–पूज्य सिद्ध शिवराज ॥३॥

## श्री सिद्धाचल स्तवन

( तर्ज-मैं वनकी चिड़िया वन के वन २ डोलूं रे )

मैं भाव सहित सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे।
तीरथ तलहट्टी में पाप सभी मैं मेटूं रे ॥ टेर ॥
यह तीर्थराज जय कारी, सेवूं मैं हित सुखकारी।
पूर्णानुराग तज कामराग सिद्धाचल तीरथ भेटूं रें। १।

इह काल अनंत अनंता साधु सिद्धा जयवंता।
जीवन विकास आतम प्रकाश सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे ।२।

श्री ऋषभदेव अविकारा, पूरव नव्वाणुवारा।
करते पुनीत पावन प्रतीत सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे ।३।

श्री पुण्डरीक गणधारा–चैत्री पूनम निस्तारा।
पंचकोटि साथ मुनि मुक्तिनाथ, सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे ।४।

द्राविड वारिखिल्लादि, दशकोटि मुनि आजादी।
कार्तिक उदात्त पूनम प्रभात, सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे ।५।

श्री सुखसागर भगवाना–गुण सिद्ध अचल परधाना।
जंजाल छोड, बस दोड होड–सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे ।६।

'हरि' पूज्य तीर्थ तारक है, दुख दुर्गति का वारक है।
जीवन पराग, धन धन्य भाग, सिद्धाचल तीरथ भेटूं रे ।७।

## श्री सिद्धाचल-स्तुति

तीरथवर सेवूं सिद्धाचल धन भाग,
जिन दर्शन दर्शन पाउं पुण्य पराग।
तलहट्टी में ही रहे न एक विकार
'हरि' पूज्य नमूं नित तीरथ तारण हार ॥१॥

## श्री सिद्धाचल-शान्ति जिन चैत्यवन्दन

श्री सिद्धाचल पुण्यतम-क्षेत्र शांति जिनराज।
चौमासा ठावें यहां-प्रभु भव सिन्धु जहाज ॥ १ ॥

परम शांति दातार जिन-शांतिनाथ भगवान।
सिद्धाचल सुखसिन्धु पद-वन्दूं भाव प्रधान ॥ २ ॥

'जिन हरि' पूज्येश्वर नमो-तीर्थनाथ सविवेक।
जयतु जयतु संसार में-गुण गरिमा अतिरेक ॥ ३ ॥

# श्री सिद्धाचल-शांति जिन स्तवन

(तर्ज-तुम को लाखों प्रणाम)

श्री शांति जिन स्वामी तुम को लाखों परणाम ।
सिद्धाचल अभिरामी तुम को लाखों परणाम । टेर ।

मृग लंछन वर कंचन काया, चौमासा सिद्धाचल ठाया ।
शांति मार्ग दिखलाया, तुम को लाखों परणाम ।१।

काल अनादि अशांति पाया, जीवन मैंने व्यर्थ गुमाया ।
पुण्योदय पद पाया, तुम को लाखों परणाम ।२।

पावन भूमि श्री सिद्धाचल-स्वामी मेरे आप अतुल बल ।
हुआ करम दल निर्बल तुम को लाखों परणाम ।३।

पाऊं मैं सुखसागर शांति-ध्यान धरूं ॐ शांतिः शांति ।
कारण कर्ता शांति तुम को लाखों परणाम ।४।

'जिन हरि' पूज्य तुम्हीं हो स्वामी, दूर करो सब मेरी खामी ।
अंतरजामी नामी तुम को लाखों परणाम ।५।

## श्री सिद्धाचल-शांति जिन स्तुति

सिद्धाचल सेवूं शांतिनाथ भगवान,
मति गति प्रभु मेरे तुम हो दया निधान ।
प्रभु तुम पद पावन अशरण शरण विशेष
मैं वंदू पूजूं 'जिन ! हरि' पूज्य ! हमेश ॥१॥

## श्री रायणरूंख आदि जिन चैत्यवंदन

रायण रूंख समोर्या—ऋषभ देव भगवान ।
पूर्व नवाणुं वार नित-वंदू विनय विधान ॥ १ ॥
मेट अकर्मक भाव को—किये सकर्मक लोक ।
आप अकर्मक हो गये-नमूं नाथ गत शोक ॥ २ ॥
सुखसागर भगवान जिन-हरि पूज्येश्वर आप ।
सिद्धाचल सेवूं सदा—महिर करो मां बाप ॥ ३ ॥

## रायणरूंख आदि जिन-स्तवन

( तर्ज-जावो जावो हे मेरे साधु रहो गुरु के संग )

जयकारी सिद्धाचल वंदो तीरथ तारण हार ।
प्रभु आये आदीश जहां पर पूर्व नवाणूं वार ॥ टेर ॥

काल अनंते साधु अनंते सिद्धक्षेत्र गुणयोग ।
भव दुख दूर हटा कर भोगें, सिद्धि सहज सुख भोग ॥ १ ॥

नाम थापना द्रव्य भाव ये, निक्षेपा हैं चार ।
कारण योगे कारज प्रकटे, न्याय मार्ग निरधार ॥ २ ॥

पुरुषोत्तम पद पावन भूमि-दर्शन वंदन भाव ।
विषय विकार मिटे प्रकटे निज-अनुपम पुण्य प्रभाव ॥ ३ ॥

रायण रूंख मनोहर अद्भुत-आदिनाथ अरिहंत ।
पावन करते वर्तमान में, दर्शन जय जयवंत ॥ ४ ॥

सुखसागर भगवान महोदय- 'जिन हरि' पूज्य विशेष ।
तीरथ वंदन करते होता करम निकंदन वेश ॥ ५ ॥

## रायण रूंख-आदि जिन स्तुति

सिद्धाचल राजे रायण रूंख उदार
मंजुल महिमा मय, गुणगरिमा भंडार।
हरि पूज्य दयालु आदीश्वर अवतार
प्रभु पूर्व नवाणुं समवसरे जयकार ॥ १ ॥

## सिद्धाचल सीमंधर जिन चैत्यवंदन

सीमंधर स्वामी नमूं-महाविदेहे आप।
वर्तमान में विचरते, दो दर्शन मां बाप ॥ १ ॥
सिद्धाचल ये आप की, प्रतिमा परमाधार।
प्रभु कारण कर्ता भविक, होते भवजल पार ॥ २ ॥
'जिन हरि'- पूज्य महागुणी दयानिधे भगवान।
और न मांगूं आप से दो मुझ दर्शन दान ॥ ३ ॥

## सीमन्धर जिन-स्तवन

( तर्ज-हे प्रभो आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिये ।

देव सीमंधर प्रभो दर्शन मुझे दे दीजिये ।
दूर कर अज्ञान सब, शुभ ज्ञान मुझ को दीजिये ॥ टेर ॥

देव दर्शन के लिये मैं, नित तरसता हूं यहां ।
जानते हैं आप भी, दर्शन मुझे दे दीजिये ॥ १ ॥

दीन हूं बल हीन हूं, पर भक्त हूं मैं आपका ।
भक्ति का आधार निज-दर्शन मुझे दे दीजिये ॥ २ ॥

हे पतित पावन प्रभो मैं, पतित हूं संसार में ।
नाथ पावन कीजिये दर्शन मुझे दे दीजिये ॥ ३ ॥

आप की अति पुण्य सेवा के सुखद 'हरि' लाभ लें ।
चाहता हूं मैं वही दर्शन मुझे दे दीजिये ॥ ४ ॥

## श्री सीमंधर जिन स्तुति

वंदूं सिद्धाचल सीमंधर भगवान,
प्रभु शिव सुखदाता परमातम विज्ञान ।
भविजन उपकारी वर्तमान अरिहंत
'हरि' पूज्य महोदय जय जय जिन जयवंत ॥१॥

## श्री पुण्डरीक चैत्यवन्दन

पुण्डरीक पावन गिरि-पुण्डरीक गणधार ।
पांच कोटि सह होत हैं-शिव सुन्दरी भरतार ॥ १ ॥

आदीश्वर अरिहंत के-प्रभु पहेले गणधार ।
कर्मकाट केवल लिया वंदूं वारंवार ॥ २ ॥

पुण्योदय दर्शन मिले 'जिन हरि' पूज्य हमेश ।
भव भव में मुझ को मिलो, ओर न चाहूं लेश ॥ ३ ॥

# श्री पुण्डरीक-स्तवन

( तर्ज—जिन मत का डंका आलम में ० )

श्री पुंडरीक पावन गिरि पै
श्री पुण्डरीक गणधार नमो।
परमेश्वर आदीश्वर शासन के
कर्णधार जयकार नमो। टेर।
चैत्री पूनम दिन पांच कोडि
मुनि संग सिधारे शिवपुर में।
अनहद् आनंद को भोग रहे
आनंद हित भविजन भाव नमो ॥ १ ॥
अभिराम नाम वर पुण्डरीक-
गिरिराज आज अघ हरते हैं।
निज काम क्रोध गजराज विदारण,
पुण्डरीक यह तीर्थ नमो ॥ २ ॥
कलुपित कुमति दुर्गन्ध निवारक,
सुमति पुण्य पराग भरा।

यह पुण्डरीक वर पुण्डरीक
गिरिराज आज भवि भाव नमो ॥ ३ ॥
निज कर्म काटने की शक्ति
बल दिव्य प्रेरणा जो करते।
भरते अद्भुत ज्योति उदार
यह पुण्डरीक परमेश नमो ॥ ४ ॥
सुखसागर श्री भगवान प्रभु
'जिन हरि' पूज्येश्वर परम गुरु।
गिरि पुण्डरीक नर पुण्डरीक
जगदीश्वर जगदाधार नमो ॥ ५ ॥

## श्री पुण्डरीक-स्तुति

तीरथ वर सेवो पुण्डरीक गिरिराज
प्रभु पुण्डरीक पद पावन शिव सुख साज।
सुखसागर साधक आराधक अवलंब
'हरि' पूज्य नमो नित पुण्डरीक प्रतिबिंब ॥१॥

## श्री अनुपम जिन चैत्यवंदन

मरुदेवी नंदन नमूं, ऋषभ देव महाराज।
जिन पद से पावन परम-शत्रुंजय गिरिराज ॥ १ ॥
द्रव्य क्षेत्र अरु काल की महिमा यहां अनंत।
कारण योगे कार्य की सिद्धि होय एकंत ॥ २ ॥
सुख सागर भगवान 'जिन हरि' पूजित ऋषभेश।
त्रिकरण शुद्धि सुबुद्धि युत, सादर नमूं हमेश ॥ ३ ॥

## श्री अनुपम जिन स्तवन

( तर्ज-छोटी मोटी सुइयां रे जाली का मेरा गूंथना )

तीरथ राजा रे, वंदूं श्री ऋषभ जिनंद को।
भव भय छोड़ूं रे, तोड़ूं कर्मों के फंद को। टेर।
तीरथ तारण हार हमारे, हां हार हमारे।
जय जय कारी रे, वंदूं श्री ऋषभ जिनंद को। १।
काल अनादि न दर्शन पायो, हां दर्शन पायो।
पुण्ये पाया रे, वंदुं श्री ऋषभ जिनंद को। २।

कामी कपटी कलुषित आतम-कलुषित आतम ।
मुझ को सुधारो रे, वंदुं श्रीऋषभ जिनंद को । ३ ।
लोक अलोक के, ज्ञाता प्रभु हैं हां ज्ञाता प्रभु हैं ।
मुझे ना विसारो रे, वंदुं श्रीऋषभ जिनंद को । ४ ।
'जिन हरि' पूज्य शरण पड़ा हूं, हां शरण पड़ा हूं ।
नाथ उबारो रे, वंदुं श्री ऋषभ जिनंद को । ५ ।

## श्री ऋषभ जिन स्तुति

कार्तिक पूनम दिन द्राविड वारिखिल्ल
मुनि पंचकोटि सह होवें भाव निशल्ल ।
प्रभु ऋषभ कृपासे वही कृपा भगवान
हरि पूज्य करो बस स्वामी दया निधान! ॥ १ ॥

इसके बाद श्री सिद्धाचल माहात्म्य वर्णन पूर्वक १०८ नमस्कार नीचे लिखे प्रकार से करें ।

# श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज के

१०८ नमस्कार

—∞∞—

१ शासनाधीश्वर श्री वर्द्धमान–स्वामि निरूपिताय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

२ जगत्त्रयवर्त्ति सकल तीर्थेभ्योऽप्यधिक महिमा धारकाय श्रीसिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

३ स्व–स्पर्शनापि प्राणिनां सकल-सिद्धिदायकाय श्रीसि० ।

४ सद्‌योग मार्गानुकूल प्राणायामादि ध्यान समाचरणेन मुनीनां सकल कर्मक्षय कारकाय श्री सिद्धाच० ।

५ सुविशुद्धदानादि धर्म-समाराधनेन प्राणिनां भव भ्रमण-वारकाय श्रीसिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।

६ सौराष्ट्र देशमण्डन भूताय श्रीसिद्धाचल तीर्थना० ।

७ श्री शत्रुञ्जयाभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।

८ श्री पुण्डरीकाभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथा० ।

९ श्री सिद्ध क्षेत्राभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
१० श्री विमलाचलाभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
११ श्री सुरगिरीत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
१२ श्री महागिरीत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
१३ श्री पदेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ नाथाय० ।
१४ श्री पर्वतराजेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
१५ श्री इन्द्रप्रकाश केत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ० ।
१६ श्री महातीर्थेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थना० ।
१७ श्री दृढ़शक्तीत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थना० ।
१८ श्री शाश्वतपर्वतेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ० ।
१९ श्री मुक्तिनिलयेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ० ।
२० श्री पुष्पदन्तेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
२१ श्री सुस्थानकेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
२२ श्री पृथ्वीपीठेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
२३ श्री सुभद्रेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ नाथा० ।
२४ श्री कैलशेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
२५ श्री पाताल मूलेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ० ।
२६ श्री अकर्मकेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।

२७ श्री सर्वकामदेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
२८ श्री सुखकामेत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
२६ श्री पुण्यराशीत्यभिधानाय श्री सिद्धाचल तीर्थ ना० ।
३० अशीति योजन पृथुलत्व षड्विंशति योजनोच्चत्व प्रथमारक परिमाणाय श्री सिद्धाचल तीर्थ० ।
३१ सप्तति योजन पृथुलत्व विंशतियोजनोच्चत्व द्वितीयारक परिमाणाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथा० ।
३२ षष्टि योजन पृथुलत्व षोडश योजनोच्चत्व तृतीयारक परिमाणाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथा० ।
३३ पंचाशद् योजन पृथुलत्व दशयोजनोच्चत्व चतुर्थारक परिमाणाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।
३४ द्वादश योजन पृथुलत्व द्वियोजनोच्चत्व पंचमारक परिमाणाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथा० ।
३५ सप्त हस्त पृथुलत्व एकयोजनोच्चत्व षष्ठारक परिमाणाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।
३६ अनंत साधु सिद्धि गति-प्राप्तिकारकाय श्री सि० ।
३७ नव नवति पूर्ववारं श्री ऋषभ स्वामि समवसरणेन पवित्रीभूत रायण पादपोपशोभिताय श्री० ।

३८ पंचकोटि साधु समन्वित श्री पुण्डरीक गणधर सिद्धि पदप्राप्तिकारणाय श्रीसिद्धाचल तीर्थनाथा० ।

३९ प्रत्येक द्विकोटि प्रमाण साधुवर्ग कलितानां नमि-विनमि विद्याधरमुनीनां सिद्धि गतिकारण भूताय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

४० नमि पुत्रीणां चतुःषष्ठि संख्यानां सिद्धिगतिकारण भूताय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

४१ दशकोटि सहितस्य शल्यस्य मुनेः सिद्धिगति कारण भूताय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

४२ द्राविड-वारिखिल्ल साधुसिद्धि पद प्राप्तिकारकाय श्री० ।

४३ पंच संख्यानां पाण्डव-मुनीनां सिद्धि गतिकारकाय श्री० ।

४४ नव नारद सिद्धि गति कारकाय श्री सिद्धाचल ० ।

४५ सांब प्रद्युम्न मुनीनां मुक्ति पद प्राप्तिकारकाय श्री० ।

४६ श्री नेमि जिनमन्तरेण त्रयोविंशति जिनवराणां समवसरणशोभिताय श्री सिद्धाचल तीर्थ ० ।

४७ श्री अजित शान्ति तीर्थंकराणां चातुर्मासिक करणेन महात्म्यधारकाय श्री सिद्धाचल तीर्थना० ।

४८ पंचशत साधु समन्वितानां शैलक साधूनां मुक्ति पद प्राप्तिकारकाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथा० ।

४९ सहस्र संख्यानां साधुगण समन्वितानां थावच्चा मुनीनां मुक्तिपदप्रापकाय श्री सिद्धाचल तीर्थना० ।

५० असंख्यातानां भरतचक्रिपट्टधारक राजर्षीणां मुक्ति-गमनेन पवित्रीभूताय श्री सिद्धाचल ती० ।

५१ रामचन्द्र–भरतादीनां मुक्तिपद प्राप्तिकारकाय श्री० ।

५२ जालि–मयालि-उवयालि प्रमुख कोटि साधूनां मुक्ति-पद प्रापकाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।

५३ भरतचक्रिणमुद्दिश्य प्रथमभगवता श्रीमद् युगादि जिनेन्द्र प्ररूपित महिमाप्रधानाय श्री सि० ।

५४ भरतचक्रिकारित प्रथमोद्धाराय श्री सिद्धाचल ती० ।

५५ श्रीऋषभदेव स्वामिनः स्वर्णमयी प्रतिमासमन्वित सुवर्णप्रसादोपशोभिताय श्री सिद्धाचल० ।

५६ गजस्कंधारूढ़ श्रीमरुदेवी प्रासाद मण्डिताय श्री० ।

५७ ब्राह्मी–सुन्दरीणां प्रासाद मण्डिताय श्री सिद्धा० ।

५८ भरतान्वय भूषणदंडवीर्यकारित द्वितीयोद्धाराय श्री० ।

५९ ईशानेन्द्र कारापित तृतीयोद्धाराय श्री सिद्धाचल० ।

६० चतुर्थ देवलोक स्वासिना माहेन्द्रनाम केन्द्रेण कारित चतुर्थोद्धाराय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।

६१ श्रीब्रह्मदेवलोक स्वामिना ब्रह्मेन्द्रेण कारापित पंचमोद्धाराय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

६२ भवनपति इन्द्र कारित षष्ठोद्धाराय श्री सिद्धाचल० ।

६३ सगरचक्रवर्त्ति कारित सप्तमोद्धाराय श्री सिद्धा० ।

६४ श्रीअभिनंदन स्वामि-सदुपदेशतः व्यन्तरेन्द्रेण कारिताष्टमोद्धाराय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय० ।

६५ श्रीचंद्रप्रभ स्वामि पौत्र श्रीचन्द्रयशोनृप कारित नवमोद्धाराय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

६६ श्रीशान्तिनाथ पुत्र श्रीचक्रधर नृपेण कारित दशमोद्धाराय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

६७ दशरथपुत्रेण रामचन्द्रेण कारापितैकादशमोद्धाराय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

६८ कुन्तीमातुः प्रदर्शित प्रकारेण संघं कृत्वा पंचपाण्डवैः कारापित द्वादशोद्धाराय श्री सिद्धाचल० ।

६९ पोरवाड जावड कारापित त्रयोदशोद्धाराय श्री सि० ।

७० श्रीमाली वाहडदे मंत्रि कारापित चतुर्दशोद्धा-
राय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

७१ समर श्रेष्ठि कारापित पंचदशोद्धाराय श्री सिद्धा० ।

७२ डोसी गोत्रीय कर्मचन्द्र कारापित षोडशोद्धा-
राय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

७३ एकाहरित्व भूमिसंथारित्व सचित्तपरिहारित्व सम्यक्त्व
धारित्व ब्रह्मचारित्वादिभिः तीर्थयात्रा कर-
णतः प्राणिनां परित्त संसार कारणाय श्री० ।

७४ मूलनायक श्री प्रथमतीर्थ नाथ श्रीऋषभदेवाधिष्ठि-
ताय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

७५ जगत्रयवर्त्ती इन्द्रचन्द्र नरेन्द्रादि पूजिताय श्री० ।

७६ अपारसंसार सागरोत्तारणाय यानपात्ररूपाय श्री० ।

७७ नरक निगोदादि दुर्गति हेतु भूत मिथ्यात्व संसर्ग-
वारकाय श्री सिद्धाचल तीर्थनाथाय नमः ।

७८ बृहस्पति वचन गोचरातीत गुणगणालंकृताय श्री० ।

७९ अनादि कर्म ग्रीष्मातप संताप संतप्त-प्राणिगण
गोशीर्ष चन्दनलेप तुल्यसुख कारकाय श्री० ।

अन्नत्थ कह कर १०८ नवकार का काउसग्ग करे। उपर एक प्रकट लोगस्स कहे।

कार्तिक पूर्णिमा के देव वंदन में बोलने योग्य स्तुतियां—

## स्तुति-१

श्री सिद्धाचलपै साधु रहें चौमास
परिपूर्ण तपस्वी ज्ञानी ध्यानी खास।
कार्तिक पूनम तक आतम ध्याने लीन
परमातम-पद्वी पावें नमूं अदीन ॥१॥
मुनिपंचकोटि सह द्राविड वालिखिल्ल,
आतम रवि ज्योति शोषें कर्मचिखिल्ल।
अजरामर पद्वी पावें परम पुनीत
वन्दूं परभाते होकर तन्मयचित्त ॥२॥
ज्ञातादिक अंगे शत्रुञ्जय अधिकार,
प्रायें गिरि शाश्वत शाश्वत सुखदातार।
नहीं भेटें नर जो मिटे न गर्भावास,
तीरथ गुण आगम गावें लीलविलास ॥३॥
कार्तिक पूनम दिन जो भाविक नर नार,
शत्रुंजय भेटे मेटे दुःख विकार।

हरि पूज्य तीर्थ में गोमुख यक्ष उदार
चक्रेश्वरी देवे सुख संपति परिवार ॥४॥

## स्तुति-२

( हरि गीत-छन्द )

तीर्थाधिराज विराजमान जिनाधिनाथ जगत्पते !
ऋषभेशदेव महेश मंगलधाम पावन शिवगते ? ।
आनंद मंदिर नत पुरंदर भाव सुन्दर चिन्मते,
नित्यं नमोऽस्तु निरन्त सद्गुण श्रीमते ते भगवते ॥१॥
संसार सागर पार कारण पाप वारण तीर्थ है,
नरकादि दुर्गति दुःखरोधन भाव भव्य समर्थ है ।
वर काति पूनम पर्व में आराधते भव्यातमा
उनको नमामि नित्य जो वहँ हो चुके परमातमा ॥२॥
ऋषभेश पौत्र विशेष द्रविड वालिखिल्ल महामना,
जहँ सिद्ध होते साथ जिनके पंचकोटि तपोधना ।
श्रीकाति पूनम पर्व में सिद्धान्त यह फरमा रहे,
आराधना शिवसाधना भविजीव जहँ नित कर रहे ॥३॥
अभिराम शत्रुञ्जय विमल गिरि पुण्डरीक सुनाम को
घर में रहे भी जो जपें, पावें परम आराम को ।
सुखसिन्धु विभु भगवान 'जिन हरि' पूज्य वर पदवी वरें,
चक्रेश्वरी गोमुख प्रमुख संताप संकट संहरें ॥४॥

॥ अर्हं नमः ॥

# सत्तरिसय-तव-विहि ।

———:o:———

## १७० तीर्थंकर-आराधन-तप-विधि

इस जंबूद्वीप के भारतवर्ष में अवसर्पिणी काल में जब कि दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवान् केवली अरिहंत रूप से विचरते थे। उसी समय दूसरे ४–भरत क्षेत्रों में ५–ऐरवत क्षेत्रों में पांच, महाविदेह की [ प्रत्येक की ३२-३२ कुल ] १६० विजयों में भी तीर्थंकर भगवान् केवली अरिहंत रूप से वर्तमान विचरते थे। पांच भरत के—५, पांच ऐरवत के—५, पांच महाविदेह की एकसौ साठ विजयों में—१६० कुल १७० तीर्थंकर भगवान केवली अरिहंत रूप से उत्कृष्ट संख्या में विचरते थे।

उनकी आराधना के लिये पूर्वाचार्यों ने—सत्तरि-सय-तव-विहि—अथवा विजय ओली तप—भव्यात्माओं को बताया है। यथा—

सप्ततिशत जिनाना-मुद्दिश्यैकैक भक्तं च।
कुर्वाणानामुद्यापना-त्तपः पूर्यते सम्यक्॥१॥

अर्थात् एकसौ सित्तर तीर्थंकर भगवानों को उद्दिश्य कर अंतर रहित एक २ इकासना करना चाहिये। इस प्रकार एक साथ निरंतर १७० इकासने करने के बाद पारणा करना चाहिये। अथवा बीस २ इकासने आठ वार करने चाहिये जिससे कि १६० इकासने हों और ऊपर दस इकासने और करने चाहिये। इस प्रकार एकसौ सित्तर इकासने और नव पारणे होते हैं। कितने ही आचार्यों का मत है कि एकसौ सित्तर एकान्तर उपवास करने से भी इस तप की साधना ठीक होती है।

जिस दिन जिन तीर्थंकर भगवान् का तप चलता हो उस दिन उन तीर्थंकर भगवान् के नाम की बीस माला जपनी चाहिये। द्रव्य-भाव पूजा यथाशक्ति करनी चाहिये देव वंदन गुरु वंदन करना चाहिये। सद्गुरु का

योग हो तो व्याख्यानादि श्रवण का लाभ लेना चाहिये। उन भगवान् का नाम लेकर काउस्सग्ग करना चाहिये बारह २ लोगस्स का। साथिये बारह करने चाहिये। खमासमण अरिहंत पद के बारह देने चाहिये।

तप की पूर्णाहुति होने पर सानंद उद्यापन करना चाहिये। बडी स्नात्र पूजा करानी चाहिये। देव-गुरु धर्म की भक्ति करनी चाहिये। संघ-साधर्मी की सेवा करनी चाहिये। यथा शक्ति तन-मन-धन से धर्म की प्रभावना करनी चाहिये। इस तप के प्रभाव से आर्य देश—मनुष्य जन्म—श्रावक खानदान—धर्म प्राप्ति और उत्तरोत्तर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जिन २ नामों की बीस २ मालायें जपी जाती हैं वे इस प्रकार हैं :—

## श्री जम्बूद्वीप के प्रथम महाविदेह में जिन नाम

१ श्रीजयदेव सर्वज्ञाय नमः
२ श्रीकर्णभद्र सर्वज्ञाय नमः

३ श्रीलक्ष्मीपति सर्वज्ञाय नमः
४ श्रीअनन्तहर्ष सर्वज्ञाय नमः
५ श्रीगंगाधर सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीविशालचंद्र सर्वज्ञाय नमः
७ श्रीप्रियंकर सर्वज्ञाय नमः
८ श्रीअमरादित्य सर्वज्ञाय नमः
९ श्रीकृष्णनाथ सर्वज्ञाय नमः
१० श्रीगुणगुप्त सर्वज्ञाय नमः
११ श्रीपद्मनाभ सर्वज्ञाय नमः
१२ श्रीजलधर सर्वज्ञाय नमः
१३ श्रीयुगादित्य सर्वज्ञाय नमः
१४ श्रीवरदत्त सर्वज्ञाय नमः
१५ श्रीचंद्रकेतु सर्वज्ञाय नमः
१६ श्रीमहाकाय सर्वज्ञाय नमः
१७ श्रीअमरकेतु सर्वज्ञाय नमः
१८ श्रीअरण्यवा सर्वज्ञाय नमः
१९ श्रीहरिहर सर्वज्ञाय नमः
२० श्रीरामेन्द्र सर्वज्ञाय नमः

२१ श्रीशांतिदेव सर्वज्ञाय नमः
२२ श्रीअनन्तकृत्सर्वज्ञाय नमः
२३ श्रीगजेन्द्र सर्वज्ञाय नमः
२४ श्रीसागरचंद्र सर्वज्ञाय नमः
२५ श्रीलक्ष्मीचंद्र सर्वज्ञाय नमः
२६ श्रीमहेश्वर सर्वज्ञाय नमः
२७ श्रीऋषभदेव सर्वज्ञाय नमः
२८ श्रीसौम्यकांति सर्वज्ञाय नमः
२९ श्रीनेमिप्रभ सर्वज्ञाय नमः
३० श्रीअजितभद्र सर्वज्ञाय नमः
३१ श्रीमहीधर सर्वज्ञाय नमः
३२ श्रीराजेश्वर सर्वज्ञाय नमः

## धातकी खंड के प्रथम महाविदेह में जिन नाम

१ श्रीवीरचन्द्र सर्वज्ञाय नमः
२ श्रीवत्ससेन सर्वज्ञाय नमः
३ श्रीनीलकांति सर्वज्ञाय नमः

४ श्रीमुञ्जकेशि सर्वज्ञाय नमः
५ श्रीरुक्मिक सर्वज्ञाय नमः
६ श्रीक्षेमंकर सर्वज्ञाय नमः
७ श्रीमृगांकनाथ सर्वज्ञाय नमः
८ श्रीमुनिमूर्त्ति सर्वज्ञाय नमः
९ श्रीविमलनाथ सर्वज्ञाय नमः
१० श्रीआगमिक सर्वज्ञाय नमः
११ श्रीनिष्पापनाथ सर्वज्ञाय नमः
१२ श्रीवसुन्धराधिप सर्वज्ञाय नमः
१३ श्रीमल्लीनाथ सर्वज्ञाय नमः
१४ श्रीवनदेव सर्वज्ञाय नमः
१५ श्रीवलभृत्सर्वज्ञाय नमः
१६ श्रीअमृतवाहन सर्वज्ञाय नमः
१७ श्रीपूर्णभद्र सर्वज्ञाय नमः
१८ श्रीरेवांकित सर्वज्ञाय नमः
१९ श्रीकल्पशाख सर्वज्ञाय नमः
२० श्रीनलिनीदत्त सर्वज्ञाय नमः
२१ श्रीविद्यापति सर्वज्ञाय नमः

२२ श्रीसुपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः
२३ श्रीभानुनाथ सर्वज्ञाय नमः
२४ श्रीप्रभंजन सर्वज्ञाय नमः
२५ श्रीविशिष्टनाथ सर्वज्ञाय नमः
२६ श्रीजलप्रभ सर्वज्ञाय नमः
२७ श्रीमुनिचन्द्र सर्वज्ञाय नमः
२८ श्रीऋषिपाल सर्वज्ञाय नमः
२६ श्रीकुडंगदत्त सर्वज्ञाय नमः
३६ श्रीभूतानंद सर्वज्ञाय नमः
३१ श्रीमहावीर सर्वज्ञाय नमः
३२ श्रीतीर्थेश्वर सर्वज्ञाय नमः

## धातकी खंड के द्वितीय महाविदेह में जिन नाम

१ श्रीधर्मदत्त सर्वज्ञाय नमः
२ श्रीभूमिपति सर्वज्ञाय नमः
३ श्रीमेरुदत्त सर्वज्ञाय नमः

४ श्रीसुमित्र सर्वज्ञाय नमः

५ श्रीषेणनाथ सर्वज्ञाय नमः

६ प्रभानन्द सर्वज्ञाय नमः

७ पद्माकर सर्वज्ञाय नमः

८ महाघोष सर्वज्ञाय नमः

९ चन्द्रप्रभ सर्वज्ञाय नमः

१० भूमिपाल सर्वज्ञाय नमः

११ सुमतिषेण सर्वज्ञाय नमः

१२ अतिच्यु श्रुत सर्वज्ञाय नमः

( अच्युत स० )

१३ तीर्थभूति सर्वज्ञाय नमः

१४ ललितांग सर्वज्ञाय नमः

१५ अमरचन्द्र सर्वज्ञाय नमः

१६ समाधिनाथ सर्वज्ञाय नमः

१७ मुनिचन्द्र सर्वज्ञाय नमः

१८ महेन्द्रनाथ सर्वज्ञाय नमः

१९ शशांक सर्वज्ञाय नमः

२० श्रीजगदीश्वर सर्वज्ञाय नमः

२१ देवेन्द्रनाथ सर्वज्ञाय नमः

२२ गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः

२३ उद्योतनाथ सर्वज्ञाय नमः

२४ नारायण सर्वज्ञाय नमः

२५ कपिलनाथ सर्वज्ञाय नमः

२६ प्रभाकर सर्वज्ञाय नमः

२७ जिनदीक्षित सर्वज्ञाय नमः

२८ सकलनाथ सर्वज्ञाय नमः

२९ शीलारनाथ सर्वज्ञाय नमः

३० वज्रधर सर्वज्ञाय नमः

३१ सहस्रार ।भा। सर्वज्ञाय नमः

३२ अशोकाख्य सर्वज्ञाय नमः

## श्री पुष्करार्धं प्रथम के महाविदेह में जिन नाम

१ श्रीमेघवाहन सर्वज्ञाय नमः

२ जीवरक्षक सर्वज्ञाय नमः

३ महापुरुष सर्वज्ञाय नमः

४ पापहर सर्वज्ञाय नमः
५ मृगांकनाथ सर्वज्ञाय नमः
६ सूरसिंह सर्वज्ञाय नमः
७ जगत्पूज्य सर्वज्ञाय नमः
८ सुमतिनाथ सर्वज्ञाय नमः
९ महामहेन्द्र सर्वज्ञाय नमः
१० अमरभूति सर्वज्ञाय नमः
११ कुमारचन्द्र सर्वज्ञाय नमः
१२ वारिषेण सर्वज्ञाय नमः
१३ रमणनाथ सर्वज्ञाय नमः
१४ स्वयंभू सर्वज्ञाय नमः
१५ अचलनाथ सर्वज्ञाय नमः
१६ मकरकेतु सर्वज्ञाय नमः
१७ सिद्धार्थनाथ सर्वज्ञाय नमः
१८ सफलनाथ सर्वज्ञाय नमः
१९ विजयदेव सर्वज्ञाय नमः
२० नरसिंह सर्वज्ञाय नमः
२१ शतानंद सर्वज्ञाय नमः

२२ वृन्दारक सर्वज्ञाय नमः
२३ चंद्रातप सर्वज्ञाय नमः
२४ चित्र (चंद्र) गुप्त सर्वज्ञाय नमः
२५ दृढ़रथ सर्वज्ञाय नमः
२६ महायशा सर्वज्ञाय नमः
२७ उष्मांक सर्वज्ञाय नमः
२८ प्रद्युम्ननाथ सर्वज्ञाय नमः
२९ महातेज सर्वज्ञाय नमः
३० पुष्पकेतु सर्वज्ञाय नमः
३१ कामदेव सर्वज्ञाय नमः
३२ समरकेतु सर्वज्ञाय नमः

## श्री पुष्करार्धे द्वितीय के महाविदेह में जिन नाम

१ प्रसन्नचन्द्र सर्वज्ञाय नमः
२ महासेन सर्वज्ञाय नमः
३ वज्रनाथ सर्वज्ञाय नमः

४ सुवर्णबाहु सर्वज्ञाय नमः
५ कुरुचन्द्र कुरुविंद सर्वज्ञाय नमः
६ वज्रवीर्य सर्वज्ञाय नमः
७ विमलचंद्र सर्वज्ञाय नमः
८ यशोधर सर्वज्ञाय नमः
६ महाबल सर्वज्ञाय नमः
१० वज्रसेन सर्वज्ञाय नमः
११ विमलबोध सर्वज्ञाय नमः
१२ भीमनाथ सर्वज्ञाय नमः
१३ मेरुप्रभ सर्वज्ञाय नमः
१४ भद्रगुप्त सर्वज्ञाय नमः
१५ सुदृढसिंह सर्वज्ञाय नमः
१६ सुव्रत सर्वज्ञाय नमः
१७ हरिचन्द्र सर्वज्ञाय नमः
१८ प्रतिमाधर सर्वज्ञाय नमः
१६ अतिश्रेय स० । अजितनाग सर्वज्ञाय नमः
२० कनककेतु सर्वज्ञाय नमः
२१ अजितवीर्य सर्वज्ञाय नमः

२२ फल्गुमित्र सर्वज्ञाय नमः

२३ ब्रह्मभूति सर्वज्ञाय नमः

२४ हित [दिन] कर सर्वज्ञाय नमः

२५ वरुणदत्त सर्वज्ञाय नमः

२६ यशःकीर्ति सर्वज्ञाय नमः

२७ नागेंद्र सर्वज्ञाय नमः

२८ महीधर सर्वज्ञाय नमः

२९ कृतब्रह्म स० ( कृतवर्म ) सर्वज्ञाय नमः

३० महेन्द्र सर्वज्ञाय नमः

३१ वर्द्धमान सर्वज्ञाय नमः

३२ सुरेन्द्रदत्त सर्वज्ञाय नमः

## जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे-जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे

१ श्रीअजितनाथ सर्वज्ञाय नमः

२ श्रीसिद्धान्तनाथ सर्वज्ञाय नमः

३ श्रीकरणनाथ सर्वज्ञाय नमः

४ श्रीप्रभासनाथ सर्वज्ञाय नमः

५ श्रीप्रभावकनाथ सर्वज्ञाय नमः

६ श्रीचन्द्रनाथ सर्वज्ञाय नमः

७ श्रीजयनाथ सर्वज्ञाय नमः

८ श्रीपुष्पदन्त सर्वज्ञाय नमः

९ श्रीअग्राहिक सर्वज्ञाय नमः

१० वलि(ल) भद्र सर्वज्ञाय नमः

## मौन एकादशी स्तुति

अरनाथ जिनेश्वर चक्रवर्ति पद धार,

मिगसिर सुद ग्यारस लें दीक्षा सुखकार।

नमिनाथ उपावें केवल ज्ञान महान

प्रभु मल्लि जनम व्रत ज्ञान नमूं बहुमान ॥१॥

दश भरत ऐरवत खेत्रों में जयकार

तिहुं काल में होते पावन पुण्य प्रचार।

मिगसर सुद एकादशी डेढ सौ सार

कल्याणक वंदूं निज कल्याण विचार ॥२॥

आवश्यक सूत्रे मल्लिनाथ भगवान

मिगसर सुद ग्यारस दीक्षा केवल ज्ञान।

श्रीज्ञाता सूत्रे पौष सुदी दिन एह

परमारथ जानें ज्ञानी सबगुण गेह ॥३॥

सुखसागर अनुपम जिन शासन भगवान
हरिपूज्य जगत में सेवा तन्मयतान।
मंजुल महिमागर मौन पर्व को पाय
करते नित उनकी विपदा दूर विलाय ॥४॥

## मौन एकादशी तप-विधि

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी का दिन मौन एकादशी नाम से प्रसिद्ध है। उस रोज वर्तमान चौवीसी के तीन भगवान श्री अरनाथ स्वामी की दीक्षा, श्रीनमिनाथ स्वामी को केवल ज्ञान, और श्रीमल्लीनाथ स्वामी का जन्म, दीक्षा और केवल ज्ञान हुआ है ऐसे पांच कल्याणक हुए हैं। पांच भरत और पांच ऐरवत क्षेत्रों में भी ऐसे ही पांच २ कल्याणक हुए हैं अर्थात् १०×५=५० कल्याणक होते हैं। भूत भविष्यत और वर्तमान ऐसे तीन काल की अपेक्षा से १५० कल्याणक होते हैं। इस रोज मौन सहित उपवास करके डेढ सौ मालायें जपने से १५० उपवास का फल होता है।

॥ मौन एकादशी का गुणना ॥

## जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥ १ ॥

॥ * ॥ प्रथम ॥ * ॥

४ ॥ श्री महायश सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः ॥

६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

## जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ २ ॥

२१ ॥ श्रीनमि सर्वज्ञाय नामः ॥

१६ ॥ श्री मल्लिअर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री मल्लिनाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री अरिनाथाय नमः ॥

## जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक ॥ ३ ॥

४ ॥ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री उदय नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥४॥

४ ॥ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री शुभंकर अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री शुभंकरनाथाय नमः ॥

३ ॥ श्री शुभंकर सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्रीसप्तनाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥५॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री गांगिलनाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥६॥

४ ॥ श्री संप्रति सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः; ॥

६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्धपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक ॥७॥

४ ॥ श्रीमृदु सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक ॥८॥

२१ ॥ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री अयोग नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥९॥

४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥१०॥

४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥११॥

२१ ॥ श्रीप्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री अक्षोभ अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री अक्षोभ नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री अक्षोभ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री मल्लिसिंह नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक ॥१२॥

४ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री धनद अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री धनद नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री पौषनाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक ॥१३॥

४ ॥ श्री प्रलंबसर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री प्रशमजित नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक ॥१४॥

२१ ॥ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री विपरीत अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री विपरीत नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री प्रशाद नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥१५॥

४ ॥ श्री अघटित सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीऋषभचन्द्र नाथाय नमः ॥

## जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥१६॥

४ ॥ श्री दयांत सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री रत्नेश नाथाय नमः ॥

## जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥१७॥

२१ ॥ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नम ॥

१८ ॥ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः॥

## जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम ॥१८॥

४ ॥ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री व्रतधर अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री व्रतधर नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री निर्वाण नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पूर्व ऐरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥१९॥

४ ॥ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पूर्व ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥२०॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः॥

१६ ॥ श्री संतोषित अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री संतोषित नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री संतोषित सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री काम नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पूर्व ऐरवते अनागत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥२१॥

४ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री चन्द्रदाह नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री दिलादित्य नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥२२॥

४ ॥ श्री अष्टाहिक सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री वणिक अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री वणिक नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥२३॥

२१ ॥ श्रीतमोनिकन्दन सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री खेमन्त नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते अनागत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥२४॥

४ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नम ॥

६ ॥ श्री रविराज अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री रविराज नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक ॥२५॥

४ ॥ श्री पुरूरव सर्वज्ञाय नमः ॥

३ ॥ श्री अवबोध अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥

७ ॥ श्री विक्रमेन्द्र नाथाय नमः ॥

## धातकीखण्डे पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक ॥२६॥

२१ ॥ श्री सुशान्त सर्वज्ञाय नमः ॥

१० ॥ श्री हर अर्हते नमः ॥

१६ ॥ श्री हर नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री हर सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ ॥ श्री नन्दकेश नाथाय नमः ॥

## धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक नाम ॥२७॥

४ ॥ श्री महाम्रगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री अशोचित अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अशोचित नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री धर्मेन्द्र नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नाम ॥२८॥

४ ॥ श्री अश्ववृन्द सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री कुटिल अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री कुटिल नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री कुटिल सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंचकल्याणक ॥२६॥

२१ ॥ श्री नन्दिक् वर्द्धमानाय नमः ॥

१६ ॥ श्री धर्मचन्द्र अर्हते नमः॥

१६ ॥ श्री धर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥

१६ ॥ श्री धर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥

१६ ॥ श्री विवेक नाथाय नमः ॥

## पुष्करार्द्ध पश्चिम ऐरवते अनागत २४ जिन पञ्चकल्याणक ॥३०॥

३ ॥ श्री कलाप सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री विसोम अर्हते नमः ॥

६ ॥ श्री विसोम नाथाय नमः ॥

६ ॥ श्री विसोम सर्वज्ञाय नमः ॥

५ ॥ श्री आरण नाथाय नमः ॥

॥ इति श्री मौन एकादशी गुणनौ संपूर्णम् ॥

## मौन एकादशी-चैत्यवन्दन-१

सर्व अर्थ साधन करे, मौन महा गुणधाम ।
श्री मल्लिप्रभु धारते, भावे करूं प्रणाम ॥ १ ॥

मिगसर सुद एकादशी, मौन महाव्रत धार ।
अर मल्लि नमिनाथ को, वन्दूं बारंबार ॥ २ ॥

श्री अरजिन व्रत धारते, मल्लि जनम व्रत ज्ञान ।
श्री नमि जिन केवल लहें जय जय जय भगवान ॥ ३ ॥

भरत ऐरवत खेत्र दश-तीन काल परिमाण ।
कल्याणक यों डेढसौ, सुखसागर सुखखाण ॥ ४ ॥

जिन हरि पूजित तीर्थपति-कल्याणक दिन आज ।
ध्याऊं धन एकादशी-पाउं अविचल राज ॥ ५ ॥

## चैत्यवन्दन-२

वचन गुप्ति संयम सुख-मौन महोदय भाव ।
जिन पूजन विधियुत क्रियाँ-वचन सिद्धि गुणदाव ॥१॥

सुव्रत वुद्धि साधना-कर अविकार विचार।
अर मल्लि नमिनाथ नित-प्रणमूं परमाधार ॥ २ ॥

जिन हरि पूज्य जगद्गुरु-पदकज पुण्य पराग।
चाहूं दिन एकादशी-पाऊं मैं धनभाग ॥ ३ ॥

## ज्ञानपद-चैत्यवन्दन

हरिगीत-छन्दः

ज्योति स्वरूप अनूप सब गुण-भूप शिव सुखदायकं,
हृदयान्धकार विकार वारण पुण्य-कारण नायकं।
मति आदि पंच-प्रकार भव परपंच दूर निवारकं,
ज्ञानं सदा वन्दे विनययुत नय-प्रमाण सुधारकं ॥ १ ॥

गुरु देव दिव्य प्रधान प्रसाद से जो होत है,
सब लोक और अलोक में जिसका महा उद्योत है।
जो एक और अनेक रूप विवेक वर विस्तारकं,
ज्ञानं सदा वन्दे विनययुत नय-प्रमाण सुधारकं ॥ २ ॥

सुखसागरं भगवान-पद्वी परम पावन लायकं
शुभ पंचमी व्रत साधना से शुद्ध बुद्धि विधायकं ।
नत 'हरिकवीन्द्र' सुकीर्तितं अति भीम भव भय हारकं,
ज्ञानं सदा वन्दे विनययुत नय प्रमाण सुधारकं ॥ ३ ॥

## ज्ञानपद-स्तवन

( तर्ज—तुम को लाखों प्रणाम )

परम ज्ञान गुण ज्योति जग में जय जय हो ।
आवे शुभ गुण ज्ञान सुजन तब निर्भय हो । टेर ।
ज्ञानी सेवा ज्ञान उपावे ।
आतम परमातम-पद पावे ।
भव दुख दूर गमावे जग में जय जय हो । १ ।
ज्ञान पंचमी जय जय कारी ।
शुद्ध बुद्धि सेवे नर नारी ।
हरि कवीन्द्र बलिहारी जग में जय जय हो । २ ।

# श्री पर्यूषण स्तुति संग्रह

( १ )

पर्वशिरोमणि वांछित सुरमणि पर्यूषण आराधो जी,
गुण गण साधन पर्वाराधन करके निज गुण साधो जी।
सद्गुणी साधक आतम बाधक कर्म समस्त खपावे जी,
सादि अनंते लोक सुअंते सिद्धि सहज सुख पावे जी ॥१॥

निर्दूषण निज आतम भूषण पर्यूषण अभिरामी जी,
काम क्रोध मद आदि अशिव प्रद दोष रहित अविरामी जी।
करके सेवन भावे भविजन त्रिभुवन में त्रिहुँ काले जी,
सिद्ध हुए होते हैं होंगे, सेवो भव भय टाले जी ॥२॥

कल्पसूत्रवर आगम सुखकर पर्यूषण में प्राणी जी,
गुरु गुण खाणी अमृत वाणी सुनते निज हित जाणी जी।
उत्तम श्री जिन जीवन पावन स्थविर चरित्र सुभावे जी,
समाचारी जो अविकारी भवसागर तिर जावे जी ॥३॥

द्वीप नन्दीश्वर जावें असुर सुर करते उत्सव भारी जी,
तैसे रचते पाप से बचते जो भाविक नरनारी जी।

पर्यूषण में निज निज शक्ते भक्ति विशेष प्रभावे जी,
सुर 'गणनायक हरि' नित उनकी सुख समृद्धि बढ़ावे जी ॥४॥

( २ )

( हरिगीत छन्दः )

पर्वाधिराज सु आज पाये पुण्य के संयोग से,
प्रभु वीर जिन आज्ञानुयायी हो अवंचक योग से।
अषाढ़ चौमासी दिवस से पुनीत तम संवत्सरी,
पंचासवें दिन कीजिये आतम क्रिया सद्गुण भरी॥१॥

संसार में सर्वोचितम आदर्श जिन जीवन कथा,
शुचि द्रव्य भाव सुभक्ति से जिनराज की पूजा तथा।
आदर्श और सुपूज्य होने के लिये पर्यूषणा,
आराधना को कीजिये निज आतमा निर्दूषणा ॥२॥

'उपनेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा' त्रिपदी मयी,
श्री कल्प सूत्र सुवाचना नव सूत्र अर्थ सुतद्दु मयी।
इक्कीस वार प्रभावनायुत सावधानी से सही,
पर्यूषणा में जो सुने भव रोग भोग रहे नहीं ॥३॥

जय जय भय हर सर्व सुख-दाता जय जय कार ! ।
जय जय मंगलमय विभो ! वीतराग गुण धार ! ॥
जय जय सुखसागर ! सदा, जय जय श्री भगवान ।
जय सुर–'गुणनायक हरि'–पूजित ज्ञान निधान ॥४॥

( ३ )

पर्यूषण संसार में, पर्व शिरोमणि सार ।
तामें श्री जिनराज को, पूजो दोय प्रकार ॥१॥
पूजा करते पूज्य गुण, प्रकटत है निर्द्धार ।
आतम हो परमातमा, पावे पद अविकार ॥२॥
जिन प्रतिमा जिन सम गिने, पूजे जो निश्शंक ।
हरि सागर गंभीर वह, जग में हो अकलंक ॥३॥

( ४ )

पर्व पजूसन आ गये, अनुपम अवसर जान ।
जिनवर पूजो प्रेम से, पावो आतम ज्ञान ॥१॥
आतम ज्ञानी आतमा, पावें आतम रूप ।
आतम रूप अनूप है, परमातम गुण भूप ॥२॥
नमो स्तु जिन हरि पूज्य को, त्रिकरण शुद्धि योग ।
सेवूं पाउं शाश्वती शान्ति सिद्धि सुख भोग ॥३॥

# श्री नवपद स्तुति

नव पद निज पद में अवतारण कर आप,
ध्यावो मिट जावे पूरव कृत सब पाप।
नहीं होय कदापि रोग शोक संताप,
श्रीपाल सुमयणा सम सुख होय अमाप ॥१॥

नव पद में अरिहंत सिद्ध परम पद देव,
आचारज पाठक साधु सुगुरु नित सेव।
सद्दर्शन ज्ञान चरण तप धर्म सुटेव,
तत्त्वत्रय समरो नवपद में स्वयमेव ॥२॥

जिन आगम वाणी सार सुखद संसार,
नवपद महिमा में संपूरण निर्द्धार।
निश्चय व्यवहारे नवपद रूप विचार,
कर भय हर भवि जन भर निज पुण्य भंडार ॥३॥

लख नौ नवपद को भवसागर में धारी,
निर्मल चित्त सेवो निज परमाद निवारी।

सुर 'गणनायक हरि-सागर' सम विस्तारी,
अनुपम सुख देवें दुख दुर्गति संहारी ॥४॥

है सार उपशम ही परम आराम पाने के लिये,
पर्यूषणा में सर्वथा स्वीकार उसको कीजिये।
उपशम गुणी भव्यातमा को देव 'गणनायक हरि',
हैं पूजते हैं वन्दते सानंद संकट संहरी ॥५॥

( २ )

( हरि गीत-छन्दः )

पाये पजूसण पुण्य पर्व सुधन घड़ी धन भाग्य है,
जहँ सत्य शिव सुन्दर गुणों में भी विशद आरोग्य है।
विभु वीर शासन संघ में आनन्द अनुपम छा गया,
जिन धर्म सुरतरु आज अपने आप ही लहरा गया ॥१॥

जिन चैत्य परिपाटी सुदर्शन दिव्य दर्शन हो गया,
निज रूप में जिन रूप से समभाव पैदा हो गया।
निज पूर्व कृत घन दुष्कृतों का भेद भी होने लगा,
पर्यूषणा में आतमा सोता हुआ सुख से जगा ॥२॥

अति शांत कांत अनंत गुण कल्याणमय आकार से,
प्रभु वीर षट कल्याणकों के भाव भी विस्तार से।
इच्छा सुरोधन रूप तप जप पूर्ण सच्चे नेम से,
श्री कल्प आगम में सुने पर्यूषणा में प्रेम से ॥३॥

साधर्मी वत्सलता सरलता पाप की आलोचना,
जग जीव से अपराध की सम्यक् क्षमा की याचना।
पर्यूषणा में शील सुव्रत साधना परभावना,
करते अमर 'गणनाथ हरि' कीरति कथा प्रस्तावना ॥४॥

( ३ )

( तर्ज—वलि २ हूं ध्याऊं )

भावे आराधूं पर्यूषण अभिराम,
निज आतम उज्ज्वल कारण पद उद्दाम।
तीर्थंकर शंकर प्रभुवर वीर जिणंद,
आज्ञा अनुयायी संघ सुमंगल कंद ॥१॥

पश्चानुपूर्वी श्री जिन वीर चरित्र,
पारस नेमीश्वर अनुपम वृत्त पवित्र

जिन अन्तर गणना ऋषभ चरित्र विशेष,
सुन कर सुख पाउं वन्दूं सर्व जिनेश ॥२॥

जो पर्यूषण में करे करावे भाव,
सब जीव अमारी अभय महागुण दाव।
व्रत बेला तेला तप हों वे निष्पाप,
सुर-'गणनायक हरि' सुख दें उन्हें अमाप ॥३॥

(४)

(तर्ज-वलि २ हूं ध्याऊं)

जिन आज्ञा रागी वडभागी भविलोक,
पर्यूषण चाहें सूरज को जिम कोक।
पर्वाराधन में होवें उद्यमवन्त,
त्रिहुँ काले पूजे वीतराग अरिहंत ॥१॥

केसरी चउपद में खग में गरुड प्रधान,
नदियों में गंगा नग में मेरु महान।
सब पर्वों में त्यों पर्यूषण को सार,
तीर्थंकर भाखें जग में जय जयकार ॥२॥

दिन आठ अठाई कल्पसूत्र वर पाठ,
विधियुत गुरु मुख तें सुनिये होवे ठाठ।
घन आठ करम के काठ सभी जल जायँ,
परमातम ज्योति पुंज प्रकट हो जाय ॥३॥

पर्वाराधन में आत्माराधन हेतु,
सात्विक तप संजम भवसागर में सेतु।
आचरते सुर 'गण नायक हरि' संताप,
हरते नित भरते सुखमय पुण्य प्रताप ॥४॥

## पर्यूषण-चैत्यवन्दन-संग्रह

(१)

पर्व पजूसन काल में वन्दूं श्री जिन राज।
धन्य घड़ी दिन भाग धन, पाया अविचल राज ॥१॥
कलियुग सतजुग से बड़ो मानूं मैं सुखकार।
धन भेटें जिनराज को, वांछित फल दातार ॥२॥
सुखसागर भगवान जिन-त्रिकरण शुद्धि विधान।
सुर 'गण नायक हरि' नमें, नमूँ नित्य बहुमान ॥३॥

( २ )

जय जय पर्यूषण पुनीत, जय जय श्री जिन राज ।
जय जय तारक तीर्थपति, शिव रमणी सिरताज ॥१॥

## देशावकासिक पारने की गाथा

जे मे जाणंति जिणा, अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु ।
ते सव्वे आलोएमो, अब्भुट्ठियो सव्व भावेणं ॥१॥

दश मन के, दश बचन के, बारह काया के इन बत्तीस दूषणों में जो कोई दूषण लगा हो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

# श्री अभय जैन ग्रन्थमाला की सस्ती, सुन्दर और उपयोगी पुस्तकें

( १ ) अभयरत्नसार ... अलभ्य

( २ ) पूजासंग्रह – इसमें अनेक सुकवियों द्वारा रचित १६ पूजाओं के साथ कविवर समयसुन्दरजी कृत चौवीशी और मनोहर स्तवनों का संग्रह है। पृष्ठ ४६४ सजिल्द मूल्य १) होने पर भी अब और घटाकर केवल ।।।) कर दिया है।

( ३ ) सती मृगावती–लेखक–भँवरलाल नाहटा पृ० ४० मू० =)

( ४ ) विधवा कर्त्तव्य - लेखकः—अगरचन्द नाहटा पृ० ६८ मू० मात्र ... =)

( ५ ) स्नान पूजादि संग्रह ... अलभ्य

( ६ ) जिनराजभक्ति आदर्श ... अलभ्य

( ७ ) युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि—लेखकः - अगरचन्द, भँवरलाल नाहटा, पृ० ४५० सजिल्द, ६ चित्र मूल्य मात्र १)

सम्राट् अकबर एवं जहांगीर को प्रतिबोध देकर जैन-शासन की महान् सेवा व अपूर्व प्रभावना करनेवाले शासन-धुरन्धर यु० जिनचन्द्रसूरिजी का प्रस्तुत चरित्र ५ वर्षों के गहन खोज-शोध एवं परिश्रम से लिखा गया है। हिन्दी-जैन-साहित्य में अपने ढंग का यह सर्व प्रथम एवं सर्वोत्तम ग्रन्थ है। रायबहादुर महामहोपाध्याय श्री गौरीशङ्करजी ओझा ने इस पर शुभ सम्मति और जैन-साहित्य महारथी श्री मोहनलालजी देसाई B.A.LL.B.

ने विस्तृत प्रस्तावना लिखी है। पुरातत्वज्ञ श्री जिनविजयजी आदि अनेकों विद्वानों एवं पत्रकारों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

( ८ ) ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह—सम्पादकः—अगरचन्द, भँवरलाल नाहटा, पृ० ६५०, सजिल्द, १८ चित्र मू० केवल ३।।)

भाषा-विज्ञान और ऐतिहासिक दृष्टि से यह ग्रन्थ अपना सानी नहीं रखता। इसमें १२ वीं शताब्दी से वर्तमान तक की ८२५ वर्षों की भाषाओं के, जैनाचार्यों व विद्वान् मुनियों संवन्धी अनेक ऐतिहासिक काव्यों का, अनेक प्राचीन भण्डारों से गहरे अनुसन्धान द्वारा संग्रह किया गया है। अधिकांश काव्य समकालीन रचित होने से उनकी प्रामाणिकता भी बहुत अधिक है। सम्पादकों के ६।७ वर्षों के महान् परिश्रम एवं गहन अन्वेषण का यह सुफल है। किंग एडवर्ड कालेज—अमरावती के प्रोफेसर, अपभ्रंश भाषा के अनन्य विद्वान् हीरालालजी जैन एम० ए० ने इसकी प्रस्तावना लिखी है। ग्रन्थ वेजोड़ एवं अद्वितीय है।

( ९ ) संघपति सोमजी शाह—लेखकः—तेजमलजी बोथरा, पृ० २४ मू० -)

( १० ) दादा श्री जिनकुशलसूरि मूल्य सिर्फ ।)

मिलने का पता—

शंकरदान शुभैराज नाहटा

नं० ५।६ आरमेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता।